# प्राचीन दधिमथी पुराण

अनुवाद : डॉ.रामकुमार दाधीच । प्रस्तोता : मिशन कुलदेवी

# प्राचीन दधिमथी पुराण

**अनुवाद व संशोधन**

**डॉ. रामकुमार दाधीच**

पूर्व निदेशक

संस्कृत शिक्षा, राजस्थान

दधिमथीपुराण एक प्राचीन संस्कृत–रचना है। यह ग्रन्थ सम्पूर्ण रूप में दुर्लभ है। इसका सार–संक्षेप श्रद्धालुजनों द्वारा अपनी कुलदेवी की महिमा के प्रचार–प्रसार के उद्देश्य से प्रकाशित कर वितरित किया जाता है। संक्षिप्त रूप में यह ग्रन्थ संस्कृत श्लोकों व हिन्दी अनुवाद के साथ तथा मात्र हिन्दी अनुवाद दोनों रूपों में मिलता है।

संक्षिप्त दधिमथीपुराण में दधिमथीमाता के अवतरण की कथा संक्षेप में है, तथापि यह ग्रन्थ की सम्पूर्ण कथा का प्रतिनिधित्व करता है। संक्षेपण के कौशल के कारण कहीं कोई अंश छुटा हुआ नहीं लगता। कथाप्रवाह भी बाधित नहीं होता।

दधिमती पत्रिका के पूर्व–सम्पादक श्री भालचन्द्रजी व्यास ने संक्षिप्त कथा वाली विविध पुस्तकों का संग्रह किया है। उनके द्वारा संक्षिप्त दधिमथीपुराण की कुछ प्रतियाँ विभिन्न पाठों में उपलब्ध करायी गई थीं। इस कृति का पाठालोचन कर संशोधित रूप में प्रकाशन किया जा रहा है।

# श्रीदधिमथीपुराणम्

## (सारसङ्क्षेपः)

### ।। श्रीगणेशाय नमः ।।

### प्रथमोऽध्यायः

### अथ ध्यानम्

**चञ्चच्चक्रमसिञ्च कम्बुधनुषी बाणाभयाम्भोरुहं,**
**शूलं सन्दधती करैस्त्रिनयना सर्वार्थसिद्धिप्रदा।**
**मुक्ताहार-किरीट-कुण्डलयुता सिंहाधिरूढा परा,**
**सम्पूज्या वरदायिनी दधिमथी कुर्यात्सदा मङ्गलम्।।1।।**

जो चलते हुए चक्र, तलवार, शंख, धनुष, बाण, अभयमुद्रा, कमल एवं त्रिशूल को अपने हाथों में धारण किए हुए हैं, और जो तीन नेत्रों वाली हैं एवं जो सकल मनोरथों की प्रदायिनी हैं, जो मुक्ताहार मुकुट और कानों में कुण्डल धारण कर विराजमान हैं और जो पराशक्तिस्वरूपा एवं परमवन्दनीया हैं, एवं जो भक्तों को वरदान देने वाली हैं ऐसी माँ दधिमथी हम सबका मङ्गल करें।।1।।

**शङ्खञ्चक्रमसिञ्च कम्बुधनुषी बाणाभयाब्जान्यपि,**
**हस्तैः स्वैर्दधतीं मृगाधिपगतां भास्वत्प्रभाभासुराम्।**
**कारुण्यामृतसागरां भगवतीं देवीमभीष्टप्रदां,**
**रत्नाभूषणभूषितां दधिमथीं ध्यायामि तामम्बिकाम्।।2।।**

जो अपने हाथों में, शंख, चक्र, ढाल, तलवार, बाण, धनुष, अभयमुद्रा एवं कमल को धारण किए हुए हैं और जो सिंह पर आरुढ़ हैं, सूर्य की प्रभा के समान कान्तिमय श्रीविग्रह धारण करने वाली हैं, करुणामृत की सागर हैं, ऐश्वर्यशालिनी हैं, अभीष्ट फल देने वाली हैं, रत्नों से जड़ित आभूषणों से सुशोभित हैं, ऐसी उन माँ दधिमथी का मैं ध्यान करता हूँ।।2।।

**चक्रं शङ्खमसिं त्रिशूलमभयं पद्मं धनुः सायकान्।**
**हस्ताब्जैर्दधतीञ्छशाङ्कवदनां रक्तांशुकोल्लासिनीम्।।**

सिंहस्थां सुरसङ्घवन्दितपदां नानाविभूषोज्ज्वलां।
देवीं वाञ्छितदायिनीं दधिमथीं वन्दे समन्दस्मिताम्॥3॥

जो अपने कर–कमलों में शंख, चक्र, खड्ग, त्रिशूल, कमल, धनुष और बाणों को धारण करने वाली हैं, चन्द्रमा के समान मुख वाली हैं, सिंह पर विराजित हैं, और समस्त देवगणों के द्वारा वन्दित चरणों वाली हैं, अनेक विभूषणों से विभूषित, भक्तों के लिए अभीष्ट फल प्रदान करने वाली मन्दहास्य करती हुई उन माँ दधिमथी की मैं वन्दना करता हूँ॥3॥

**वशिष्ठ उवाच ॥1॥**

**वशिष्ठ जी ने कहा**

**योगमाया महालक्ष्मीर्दाधीचकुलरक्षिका।**
**सैषा नारायणी प्रोक्ता दधिमन्थनविश्रुता॥2॥**

दधिसागर के मन्थन के कारण जो सुप्रसिद्ध हुईं, वे ही योगमाया, महालक्ष्मी, और वे ही नारायणी देवी कही गई हैं॥2॥

**तन्माहात्म्यं प्रवक्ष्यामि पापघ्नं पुण्यवर्धनम्।**
**सावधानेन मनसा श्रूयताम्भो नगेश्वर॥3॥**

मैं उन्हीं के माहात्म्य का वर्णन करूँगा, जो कि पापनाशक और पुण्यवर्द्धक है, अतः हे नगेश्वर! आप सावधान मन से सुनिए ॥3॥

**श्रीमन्नारायणादादौ जायते विश्वसृङ्विधिः।**
**तस्मादथर्वणो जातो भानुदीप्तिसमप्रभः॥4॥**

विश्व–रचयिता ब्रह्मा आरंभ में भगवान् श्रीमन्नारायण से समुत्पन्न हुए थे, और उन्हीं से सूर्य के समान तेजस्वी अथर्वण ऋषि उत्पन्न हुए ॥4॥

**स्वायम्भुवस्य कन्यायां देवहूत्यां पुरा नग।**
**कर्दमस्य तु योगेन बभूवुर्नव कन्यकाः॥5॥**

हे पर्वतेश्वर! स्वायम्भुव मनु की कन्या देवहूति तथा कर्दम का विवाह होने पर उनके नौ कन्याएँ हुई।

**कर्दमाद् देवहूत्यां या सुता शान्तिर्बभूव ह।**
**ब्रह्माज्ञया प्रेर्यमाणोऽथर्वणे दत्तवान्मुनिः ॥6॥**

देवहूति से कर्दमऋषि द्वारा जो पुत्री हुई उसका नाम शान्ति था। उसी शान्ति को ब्रह्मा जी की आज्ञा से प्रेरित होकर मुनि कर्दम ने अथर्वा को प्रदान किया ॥6॥

**व्रतं शोभनं धर्मशास्त्रानुकूलं, ससन्ध्याग्निहोत्रादि कुर्वन् सदैव।**
**कलत्रेण कालं निनायातिदीर्घं, न लेभे सुतं वंश-वृद्ध्यै तथापि॥7॥**

धर्मशास्त्र के अनुकूल, सन्ध्या अग्निहोत्रादि सुन्दर व्रतों का सदैव पालन करते हुए अपनी पत्नी (शान्ति) के साथ बहुत सा काल वंशवृद्धि हेतु व्यतीत कर दिया। परन्तु पुत्र प्राप्त न हुआ।

**मुहुश्चिन्तितोऽथर्वणः पुत्रकामो, न दुःखस्य पारं परं प्राप्तवान्सः।**
**उवाचेत्थमेतद्वृथा जीवनं धिक्, बिना सन्ततिं मृत्युलोके ममास्ति॥8॥**

पुत्रार्थी अथर्वा पुत्र प्राप्त नहीं होने से जो दुःख था, उसका कोई पार नहीं पा सके।

अथर्वा ने कहा कि इस संसार में बिना सन्तान के मेरा यह जीवन धिक्कार योग्य है॥8॥

**तस्यैवं न्यूनमात्मानं मन्यमानस्य खिद्यतः।**
**विप्रर्षिर्नारदोऽभ्यागादाश्रमं प्रागुदीरितम्॥9॥**

अथर्वा इस प्रकार अपने को हीन मानकर खिन्न हो रहे थे। तभी उनके आश्रम में देवर्षि नारद आ पहुँचे ॥9॥

**इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये अथर्वण-ऋषेर्जन्मचरित्र वर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः**

# द्वितीयोऽध्यायः

वशिष्ठ बोले ॥1॥

**वशिष्ठ उवाच॥1॥**

**दृष्ट्वा नारदमायान्तं जटिलम्पीतवाससम्।**
**सभार्यः सहसोत्थाय मोदमानो महामुनिः॥2॥**

इस प्रकार जटाधारी एवं पीले वस्त्रों को धारण किए हुए देवर्षि नारद को आश्रम में आते हुए देखकर, ऋषि अथर्वा सपत्नीक प्रसन्न होते हुए अचानक उठ खड़े हुए ॥2॥

**प्रणम्य शिरसा चादावर्घ्यपाद्यादिकं ददत्।**
**आसनं चापि श्रद्धातो नारदाय न्यवेदयत्॥3॥**

सर्वप्रथम देवर्षि नारद को प्रणाम कर, अर्घ्य, पाद्य (चरण धोने के लिए जलादि) देकर, फिर श्रद्धापूर्वक आसन देकर बैठने हेतु प्रार्थना की ॥3॥

**अथर्वोवाच ॥4॥**

अथर्वा बोले ॥4॥

**अद्य मे सफलञ्जन्म अद्य मे सफलाः क्रियाः।**
**सफलश्चाश्रमः पुण्यस्त्वदागमनकारणात्॥5॥**

हे नारद जी ! आज आपके यहाँ पधारने से मेरा जन्म, कर्म और यह आश्रम सभी पवित्र हो गए॥5॥

**लोकेशसूनोऽखिलपापहारिन् परोपकारिन्करुणावतार।**
**रक्ष प्रभो मां मयि सुप्रसीद स्वच्छन्दगामिन्भगवन्नमस्ते ॥6॥**

हे ब्रह्मपुत्र ! समस्त पापों के विनाशक! जीवों का उपकार करने वाले ! हे करुणावतार! प्रभो! मेरी रक्षा करो। मुझ पर आप प्रसन्न होवें। हे स्वच्छन्दगामिन्! श्री नारदजी आपके लिए नमस्कार है॥6॥

**नारद उवाच ॥7॥**

नारद बोले ॥7॥

**ऐश्वर्यं तव पश्यामि सुरेन्द्रभवनाधिकम्।**
**समृद्धिः शोभते ब्रह्मन्नाश्रमे तव शाश्वती॥8॥**

हे ऋषि! मैं यहां तुम्हारे आश्रम में इन्द्रभवन से अधिक ऐश्वर्य को देख रहा हूँ और तुम्हारे पास निरन्तर रहने वाली सुख–समृद्धि भी सुशोभित हो रही है॥8॥

**कथं भवानुदासीनः किन्ते मनसि वर्तते।**
**येन त्वं खिद्यमानोऽसि व्यथार्त्त इव दृश्यसे॥9॥**

फिर भी तुम उदास क्यों दिखाई दे रहे हो? तुम्हारे मन में ऐसी क्या बात है, जिससे तुम दुःखी जान पड़ रहे हो ॥9॥

**अथर्वण उवाच ॥10॥**

अथर्वा बोले ॥10॥

**भगवन् किन्न जानासि तपोबलप्रभावतः।**
**तथापि कथयिष्यामि स्वात्मनो दुःखकारणम्॥11॥**

हे भगवन् ! आप तपोबल के प्रभाव से क्या नहीं जानते ? फिर भी मैं अपने दुःख के कारण को आपसे कहता हूँ॥11॥

**कुबेरसदृशं सौख्यं मम गेहे प्रवर्तते।**
**अप्रजस्य ममाह्लादः कथं भवितुमर्हति॥12॥**

मेरे घर में धनपति कुबेर जैसा सुख है, परन्तु मेरे सन्तानहीन होने से, वह सुख किस काम का ? ॥12॥

**अप्रजस्य महद्दुःखात्कुशलं नैव जायते।**
**महाचिन्तातुरौ जातावावां जायापती सदा॥13॥**

सन्तान नहीं होने के महादुःख से हम दुःखी हैं। हम पति–पत्नी दोनों ही इस कारण से अत्यन्त चिन्तित हैं॥13॥

यत्पूर्वं भवता पृष्टं कथितं तत्सविस्तरम्।
येन दुःखेन व्यग्रोऽहं तस्मात् पाहि मुनीश्वर॥14॥

हे मुनिश्रेष्ठ नारद जी ! जैसा आपने मुझसे पूछा, वह सब मैंने विस्तारपूर्वक बतला दिया, अब मैं जिस दुःख से चिन्तित हूँ, उससे आप मेरी रक्षा करें॥14॥

नारद उवाच ॥15॥

नारद बोले ॥15॥

भो भोऽथर्वन्महाभाग श्रेयोवान्बहुभाग्यवान्।
पुण्यवान्सत्यसन्धश्च दृढधर्मपरायणः॥16॥

हे महाभागी अथर्वा! तुम कल्याणकारी हो। तुम अत्यन्त भाग्यशाली हो। हे पुण्यकर्मा! तुम सत्य का पालन करने वाले और धर्म का दृढ़तापूर्वक पालन करने वाले हो ॥16॥

ब्रह्मज्ञस्त्वम्मुनिश्रेष्ठ श्रेयस्कर्मप्रभावतः।
लब्ध्वा मनोरथान्सर्वान्सद्यः सुखमवाप्स्यसि॥17॥

हे मुनिश्रेष्ठ ! तुम ब्रह्मतत्त्व के ज्ञाता हो । तुम श्रेष्ठ कर्मों के प्रभाव के कारण समस्त मनोरथों को शीघ्र ही प्राप्त कर, सुख प्राप्त करोगे॥17॥

शृणु विप्र प्रवक्ष्यामि तवाग्रे व्रतमुत्तमम्।
गोप्यञ्च मम सर्वस्वं यत्पुरा ब्रह्मणा श्रुतम्॥18॥

हे विप्र ! अब मैं तुम्हें वह सर्वथा गोपनीय और जो कि ब्रह्मा जी से मैंने सुना था, उस उत्तम व्रत को तुम्हारे लिए कहूँगा॥18॥

एकदा ब्रह्मलोकेऽहं गतो दर्शनकांक्षया।
कमलासन आसीनं दृष्टवान् चतुराननम्॥19॥

एक बार मैं ब्रह्मा जी के दर्शन की अभिलाषा से ब्रह्मलोक को गया और वहाँ कमल के आसन पर विराजमान ब्रह्मा जी को देखा॥19॥

मया सर्वविधानेन पूजितश्च प्रजापतिः।
साष्टाङ्गं प्रणिपत्यादौ पृष्टवान्व्रतमुत्तमम्॥20॥

**सन्ततिर्जायते यस्माद्यच्च सम्पत्तिदायकम्।**
**सर्वबाधोपशान्त्यर्थं व्रतं कथय चानघ॥21॥**

मैंने ब्रह्मा जी को सर्वप्रथम साष्टांग प्रणाम कर, उनका सभी प्रकार से पूजन किया और उत्तम व्रत पूछा। जो सभी प्रकार के सुख प्रदान करने वाला, सभी बाधाओं का विनाश करने वाला और जो सन्तान देने वाला उत्तम व्रत है उसके बारे में बताएँ। ॥20-21॥

**इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये नारदागमनवर्णनो नाम द्वितीयोऽयाय:॥**

॥ श्री दधिमथीपुराण में दधिमथीदेवीमहिमावर्णन में नारद-आगमन वर्णन नामक द्वितीय अध्याय पूर्ण हुआ॥

# तृतीयोऽध्याय:

**ब्रह्मोवाच ॥1॥**

ब्रह्मा बोले ॥1॥

**अथात: श्रूयतां वत्स ! पीठं कपालसंज्ञितम्।**
**यस्य दर्शनमात्रेण सर्वपापै: प्रमुच्यते ॥2॥**

हे वत्स ! नारद ! तुम कपालपीठनामक तीर्थस्थल के विषय में सुनो। जिसके दर्शनमात्र से ही मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाते हैं॥ 2॥

**यत्र देव्या: कपालं वै पपात वृषभध्वजात्।**
**ब्रह्मात्मकं महादिव्यं योगिध्येयं सनातनम्॥3॥**

जिस स्थान पर वृषभध्वज भगवान् शिव के कन्धे पर स्थित सतीजी के शव का कपाल गिरा था, वही स्थान ''कपालपीठ'' नामक, सर्वतीर्थों में श्रेष्ठ, योगियों द्वारा ध्यानयोग्य, ब्रह्मस्वरूप अत्यन्त दिव्य और शाश्वत पवित्र स्थल हुआ ॥3॥

**महामाया-महाक्षेत्रं पीठानां चोत्तमोत्तमम्।**
**सर्वतीर्थवरं चापि सिद्धिदञ्च बभूव तत्॥4॥**

वही 'कपालपीठ' महामाया का महाक्षेत्र और समस्त पीठों में उत्तम और सिद्ध क्षेत्र हुआ ॥4॥

**पुष्करादुत्तरे भागे योजनाष्टकमानतः।**
**महामाया-महाक्षेत्रं वर्तते चातिपावनम्॥5॥**

महासिद्धक्षेत्र तीर्थराज पुष्कर से उत्तर दिशा की ओर आठ योजन (लगभग 32 कोश/96 कि.मी.) की दूरी पर स्थित है। वह महामाया (भगवती दधिमथी) का महाक्षेत्र अत्यन्त ही पवित्र है॥5॥

**तत्र ब्रह्मकपालस्था योगेशी योगतत्परा।**
**सर्वाकारा निराकारा पराशक्तिर्व्यवस्थिता॥6॥**

वहीं ब्रह्मकपाल क्षेत्र में भगवती योगेश्वरी, योगतत्परा, सर्वाकारा, निराकारा और पराशक्ति के स्वरूप में विराजमान है॥6॥

**भद्राय सर्वलोकानां भक्तानामभयाय च।**
**सर्वाकारा निराकारा पराशक्तिर्व्यवस्थिता॥7॥**

समस्त लोकों का कल्याण करने के लिए और भक्तों को अभय वरदान देने के लिए वह भगवती दधिमथी सर्वाकार, निराकार और पराशक्ति के रूप में विराजमान है ॥7॥

**रहोदेशे महारण्य एकैवासौ सुरेश्वरी।**
**विराजते महादेवी कोटिब्रह्माण्डविग्रहा॥8॥**

वही सुरेश्वरी, घनघोर जंगल के एकान्तभाग में, एक होते हुए भी कोटि-ब्रह्माण्ड-स्वरूपिणी विराजमान है॥8॥

**दर्शनं ये करिष्यन्ति पुण्यात्मानो दृढव्रताः।**
**निहत्य विपदं सद्यः सिद्धिं यास्यन्ति मानवाः॥9॥**

जो पवित्रमन वाले दृढ़व्रत धारण करने वाले मनुष्य उनके दर्शन करेंगे, वे मनुष्य शीघ्र ही विपत्तिमुक्त होकर परम सिद्धि को प्राप्त करेंगे॥9॥

नवरात्रव्रतन्तत्र सात्त्विकं परमोत्सवम्।
ये ब्राह्मणाः करिष्यन्ति ते प्राप्स्यन्ति परं पदम्॥10॥

जो भी ब्राह्मण सात्त्विक रूप से वहाँ नवरात्रव्रतरूप परमोत्सव का अनुष्ठान करेंगे, वे परमपद को प्राप्त करेंगे॥10॥

नार्यो दर्शनमात्रेण धनधान्यसमन्विताः।
वैधव्यभयनिर्मुक्ता भविष्यन्ति पतिप्रियाः॥11॥

स्त्रियाँ इस नवरात्र व्रतोत्सव के करने से एवं भगवती के दर्शनमात्र से धन-धान्यादि से युक्त होकर, वैधव्य होने के भय से मुक्त होकर, अपने पति को प्रिय लगने वाली होंगी॥11॥

रोगिणो रोगनिर्मुक्ता व्यङ्गाः साङ्गाश्च सुन्दराः।
भविष्यन्ति न संदेहो महामायाप्रसादतः॥12॥

भगवती महामाया की कृपा से रोगीजन परमस्वस्थ होंगे। विकलांग, सुन्दर एवं सर्वांग होंगे, इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं है॥12॥

क्रियते पूजनं देव्याः पुष्करस्थैर्महर्षिभिः।
वारानुक्रमतः सर्वैर्वशिष्ठाद्यैर्महात्मभिः।
स्तूयते च महादेवी ब्रह्मविष्णुसुरादिभिः॥13॥

सभी वारों के अनुसार पुष्करतीर्थ स्थित वशिष्ठादि महर्षियों के द्वारा देवीजी का पूजन किया जाता है, और ब्रह्मा विष्णु देवादि द्वारा भी इन महादेवी की स्तुति की जाती है॥13॥

नवरात्रे तु सम्प्राप्ते मार्कण्डेयो महामुनिः।
पूजनं कुरुते देव्या दीर्घायुस्तत्प्रसादतः॥14॥

नवरात्र के अवसर पर मार्कण्डेय महामुनि देवी की अर्चना करते हैं। वे देवी की कृपा से दीर्घायु हुए हैं॥14॥

रविवारे वशिष्ठोऽसावादिमातेति नामतः।
कूटेन वाग्भवेनैव पूजनं कुरुते सदा॥15॥

रविवार के दिन मुनि वशिष्ठ द्वारा ''आदिमाता'' के नाम से स्तुतिसमूहों से इनका सदैव पूजन किया जाता है।।15।।

**सोमेऽह्नि वामदेवोऽसौ महामायेति नामतः।**
**लक्ष्मीकूटेन देवेशीं समर्चयति नारद !।।16।।**

हे नारद! सोमवार के दिन वामदेव के द्वारा 'महामाया' इस नाम से महालक्ष्मी देवेश्वरी की वैभवपूर्ण स्तुतियों से आराधना की जाती है।।16।।

**मंगलेऽह्नि महादेवीं कपिलोऽप्यर्हति स्वयम्।**
**मूलप्रकृतिनाम्ना च कालीकूटेन नित्यशः।।17।।**

मंगलवार के दिन स्वयं कपिलदेव 'मूलप्रकृति' नाम से काली–स्तुति से नित्य अर्चन करते हैं।।17।।

**कूटत्रयेण सा देवी राजराजेश्वरी परा।**
**कुम्भसंभवसम्पूज्या बुधवारे तु संततम्।।18।।**

बुधवार के दिन वही राजराजेश्वरी, पराशक्ति त्रिकूट अर्थात् महासरस्वती, महालक्ष्मी, महाकाली इन तीनों के स्तुतिसमूहों से मुनि अगस्त्य द्वारा सदैव सम्पूजित होती है।।18।।

**गुरुवारेऽपि तां देवीमथर्वा मुनिसत्तमः।**
**हृल्लेखया पराश्यामानाम्नाऽभ्यर्चयते शिवाम्।।19।।**

गुरुवार के दिन मुनिश्रेष्ठ महर्षि अथर्वा द्वारा हृदयस्थ चित्रों से 'पराश्यामा' इस नाम वाली 'शिवा' की अर्चना की जाती है।।19।।

**भार्गवेऽह्नि तथा देवीमङ्गिराः प्रणवेन वै।**
**शारदानामतः पूजां करोति यतमानसः।।20।।**

शुक्रवार के दिन महर्षि अङ्गिरा श्रद्धायुक्त होकर प्रणवोच्चारण (ॐ कार) पूर्वक शारदा नाम से पूजा करते हैं ।।20।।

**मन्दवारे सपर्यां तु कुरुतेऽत्रिर्मुनीश्वरः।**
**मालिन्या मालिनीनाम्ना कुन्दैः पुष्पैः सचन्दनैः।।21।।**

शनिवार के दिन मुनीश्वर अत्रि मालाधारिणीदेवी नाम से मालिनी छन्दविशेष से चन्दन सहित कुन्द पुष्पों से सेवार्चना करते हैं ॥21॥

**नवरात्रे महामाया नवदुर्गेति नामतः।**
**मार्कण्डेयः करोत्येवं व्रतं चैवार्हणां तथा॥22॥**

इसी प्रकार 'नवरात्र में महामाया की नवदुर्गा इस नाम से मार्कण्डेय मुनि व्रतार्चना करते हैं ॥22॥

**महालक्ष्मीसमायुक्तः कल्पद्रुमतले स्थितः।**
**महारात्र्यां महाविष्णुर्देवीमर्चयते मुने ! ॥23॥**

हे मुने ! महारात्रि में कल्पवृक्ष के नीचे स्थित होकर महालक्ष्मी सहित भगवान् महाविष्णु देवी की अर्चना करते हैं ॥23॥

**महासरस्वतीयुक्तश्चिन्तामणिसुपीठके।**
**वेधा विधत्तेऽपचितिं मोहरात्र्यामतन्द्रितः॥24॥**

मोहरात्रि में ब्रह्मदेव चिन्तामणि–पीठ पर महासरस्वती सहित सावधान होकर देवीजी की सेवा करते हैं ॥24॥

**कामधुक्पुरतो रुद्रो महाकाल्यान्वितः प्रभुः।**
**कालरात्र्यां करोत्येष पूजनं पुण्यवर्द्धनम्॥25॥**

मुने! कालरात्रि में भगवान् महारुद्र महाकाली सहित कामधेनु के सामने बैठकर यह पुण्य वृद्धि करने वाला देवीपूजन करते हैं ॥25॥

**इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवी माहात्म्ये नवरात्रव्रतवर्णनोनाम तृतीयोध्यायः॥**

॥श्रीदधिमथीपुराण में दधिमथीदेवीमाहात्म्य में नवरात्रव्रतवर्णन नामक तृतीय अध्याय पूर्ण हुआ॥

# चतुर्थोऽध्यायः

## नारद उवाच ॥1॥

नारद बोले॥1॥

**ब्रह्मदेव महायोगिन्सर्वज्ञानभृतां वर।**
**महामाया दधिमथीनाम प्राप्तवती कथम्॥2॥**

हे ब्रह्माजी ! आप सभी ज्ञानी जनों में श्रेष्ठ एवं महायोगी हैं। आप कृपा करके बतलाएँ कि 'महामाया' का नाम दधिमथी कैसे हुआ?॥2॥

**तदेतन्महदाश्चर्यं हृदये प्रतिभाति मे।**
**कृपया वद तद्देव संशयोच्छेदनाय वै॥3॥**

क्योंकि मेरे हृदय में यह महान् आश्चर्य का विषय है। अतः आप कृपा करके यह बात कहें जिससे इस शंका का समाधान हो जाए॥3॥

## ब्रह्मोवाच ॥4॥

॥ ब्रह्मा बोले ॥4॥

**पुरा देवासुराः सर्वे पीयूषार्थं महोदधिम्।**
**ममन्थुस्ते महावीर्या अक्षमास्ते यदाभवन्॥5॥**

प्राचीनकाल में देवताओं और असुरों ने अमृत प्राप्त करने के लिए महासागर का मन्थन किया। वे अत्यन्त बलशाली होते हुए भी, असमर्थ रहे तब ॥5॥

**मयानुनोदिताः सर्वे महामायां प्रतुष्टुवुः।**
**प्रादुर्भूता महामाया विराजा वपुषा तदा॥6॥**

मेरे द्वारा अनुमोदित (प्रेरित) होकर, उन सभी ने महामाया को स्तुतियों से प्रसन्न किया। तब जाकर विराट् श्रीविग्रह से 'महामाया' प्रकट हुई॥6॥

**सहस्रमुखपाद्धस्ता सहस्रादित्यसन्निभा।**
**मातृभिः पूजिता देवी सिन्धुतीरेऽतिशोभने॥7॥**

अत्यन्त रमणीय समुद्र के किनारे हजारों मुखों व हजारों चरणों से युक्त वह

महामाया हजारों सूर्यों के समान तेजस्विनी व मातृ-गणों से सुपूजित थी॥7॥

**निक्षिप्य चौषधीः सर्वा दधिकृत्वैव नीरधिम्।**
**ममन्थेऽति महादेवी ततो रत्नानि जज्ञिरे॥8॥**

उस देवी ने समुद्र में सभी औषधियाँ डालकर एवं समुद्र को दधियुक्त बनाकर मन्थन किया। खूब मन्थन करने पर, समुद्र से बहुमूल्य रत्न निकले॥8॥

**ततो देवासुरास्तुष्टास्तुष्टुवुर्जगदम्बिकाम्।**
**ततः प्रभृति लोके सा नाम्ना दधिमथी स्मृता॥9॥**

तब प्रसन्न देवताओं और असुरों ने मिलकर जगदम्बिका को स्तुतियों से प्रसन्न किया। तभी से लेकर इस संसार में वह (महामाया) ''दधिमथी'' नाम से प्रसिद्ध हुई॥9॥

**अहं शिवश्च विष्णुश्च तथैव मुनयः परे।**
**स्तुतिं चक्रुर्महाम्बाया यथावदवधारय॥10॥**

मैंने, शिव और विष्णु और अन्य मुनिगणों ने उस महाम्बिका की स्तुति की। उसे यथार्थरूप में जानो ॥10॥

**ब्रह्मोवाच॥11॥**

॥ब्रह्मा बोले॥11॥

**निःशेषैर्निगमैर्निषेधमुखतो या ज्ञायते किञ्चन,**
**योगीन्द्रैः सनकादिभिः शमदमाद्यैर्ध्यायते नित्यशः।**
**स्वात्मारामतयात्मविज्ञनमता ज्योतिः प्रशान्ता परा,**
**सा नः काङ्क्षितसिद्धये दधिमथी माता सदा राजताम् ॥12॥**

जो समस्त वेदादि द्वारा ''नेति नेति'' इस प्रकार के निषेध वचनों द्वारा कुछ जानने योग्य है। जो योगीश्वरों, सनकादिकों से शम-दमादि द्वारा नित्य ध्यानगम्य है, और जो आत्मवेत्ता विद्वानों द्वारा अपनी आत्मा में रमण करने वाली परा-प्रशान्ता ज्योतिरूपा मानी जाती है। वही माता दधिमथी हमारी मनोवाञ्छित सिद्धि के लिए सदा सुशोभित होवे ॥12॥

**शिव उवाच ॥13॥**

॥शिव बोले॥13॥

आदौ निर्गुणमेव रूपमपरं जातं कपालात्मकं,
वैराजात्मकमेतदेव समभूद् ब्रह्मादिभिः संस्तुतम्।
क्षीरोदार्णवमन्थने ऽतिरुचिरं भक्तैकरक्षाकरं,
रूपं तेऽस्तु सहस्त्रहस्तचरणैर्वक्त्रादिभिर्नो मुदे॥14॥

आरंभिक निर्गुण स्वरूप ही दूसरा कपालात्मक सगुण स्वरूप हुआ। यही ब्रह्मादि द्वारा स्तुति किए जाने पर विराट् रूप हो गया। क्षीरसागर के मन्थन के समय में अत्यन्त सुन्दर, भक्तों का एकमात्र रक्षक, वही हजारों हस्त-चरण एवं मुखारविन्दों से युक्त आप माँ दधिमथी का सुन्दर स्वरूप हम भक्तों को प्रमुदित करे॥14॥

**विष्णुरुवाच॥15॥**

॥विष्णु बोले॥15॥

निःसारोदधिमन्थनव्यवसिताः क्लिष्टाः सुराः संस्तवै-
स्त्वामाराध्य महोच्चकोटिघटनां प्रापुः सुधां ते खलु।
चित्रं तन्नहि भासते कृतधियां मुक्तैकचिन्तामणे,
सान्निध्यं दधिमन्थिनि क्षितिभवे सर्वार्थदं ते यतः॥16॥

सारहीन समुद्रमन्थन में लगे समस्त देवगणों ने स्तुतियों से आपकी आराधना करके, इस महती घटना से अमृत को प्राप्त किया।

हे मुक्तपुरुषों के लिए एकमात्र चिन्तामणिरूपा मां दधिमथी! बुद्धिमानों के चित्त में यह कोई आश्चर्यजनक नहीं है, क्योंकि हे मरुभूमिसमुद्भूते माँ दधिमथी! आपका सान्निध्य सभी प्रकार के (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) मनोरथों को प्रदान करने वाला है॥16॥

**देवा ऊचुः॥17॥**

॥देवगण बोले॥17॥

मूढो विश्वविधानकर्मणि विधिर्ध्यात्वा चिरं त्वां पुरा
लेभे सृष्टिविधायिनीं मतिमथो विष्णुस्तथा पालने।

**दक्षापत्यतया हरस्य ललना भूयो बभौ संसृता-**
**वस्मत्प्रार्थनयाऽधुना दधिमथी सा पातु विश्वं सदा ॥18॥**

ब्रह्मा सृष्टि की रचना के आरंभ में जब किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो गए, तब उन्होंने चिरकाल तक आपका ध्यान करके ही संसार-रचना की बुद्धि प्राप्त की और इसके पश्चात् विष्णु ने सृष्टिपालन-विधि प्राप्त की। शिव की अर्द्धांगिनी भगवती ही हमारी प्रार्थना से दक्ष की कन्या के रूप में अवतरित हुई। वह दधिमथी सदा विश्व की रक्षा करे॥18॥

**मुनय ऊचुः ॥19॥**

॥मुनिजन बोले॥19॥

**क्षीराब्धेः परिमन्थनेऽतिसहसाऽहो काश्यपेया यदा,**
**क्षीरान्नाप्यलभन्त चामृतमथो रत्नानि भूर्युद्यमाः।**
**कृत्वैतद्दधिसागरं त्वमथ भो निःक्षिप्य सर्वौषधी-**
**र्निर्मथ्यैव चतुर्दशौकसहिता भूतीः प्रदातुं स्थिता॥20॥**

अहो ! जब क्षीरसागर के मन्थन के लिए कश्यप-पुत्र (देव-दानव) बहुत परिश्रम करने पर भी क्षीर से अमृत और रत्न प्राप्त नहीं कर सके, तब आप सहसा उस क्षीर-सागर को दधिसागर बनाकर, उसमें सम्पूर्ण दिव्य औषधियाँ डालकर, उसे मथकर चतुर्दश लोकों को ऐश्वर्य प्रदान करने वाली हुईं ॥20॥

**मनव ऊचुः॥21॥**

॥ मनुगण बोले॥21॥

**दूरीकृत्य महान्धकारगहनं विश्वं प्रकाशीकृतं,**
**सृष्टा मातरथो सुरासुरनरास्तेष्वन्तिमाः स्मो वयम्**
**स्नेहोद्रिक्ततया कनिष्ठतनये तिष्ठावनौ पाहि नः,**
**पूर्णाया नहि वाञ्छितं किमपि ते क्षीराब्धिसंक्षोभने ॥22॥**

हे माँ ! आदिकाल में आपने गहन अंधकार को दूरकर इस विश्व को प्रकाशित किया। अज्ञानरूप तम को मिटाकर इस विश्व को ज्ञानरूपी प्रकाश से आलोकित किया।

हे माँ ! आपने देव, दानब और मनुष्यों को उत्पन्न किया, उन सभी में हम मानव कनिष्ठ हैं। अतः हम पर स्नेह बढ़ाकर धरती पर विराजित होकर हमारी रक्षा कीजिए।

आप क्षीर–सागर का मन्थन करने वाली हैं, अतः आप सर्वसमर्थ एवं परिपूर्ण रूपा हैं। आप हमसे कुछ भी तो नहीं चाहतीं ॥22॥

**असुरा ऊचुः ॥23॥**

असुर बोले ॥23॥

**दायादाः सकलाः सुरा हरिमुखा नास्माकमर्च्यास्ततो,**
**वृद्धोऽयं द्रुहिणः पितामहतया कार्येऽपि न स्यात्समः।**
**रुद्रो रुद्रवपु र्विरुध्यति जने क्षुद्रापराधेष्वपि,**
**ह्येका त्वं परिशिष्यसे मरुभवे याऽभ्यर्चतां कामधुक्॥24॥**

देवता तो हमारे उत्तराधिकार में हिस्सेदार हैं। वे हमारे पूज्य नहीं। वृद्ध ब्रह्मा पितामह के रूप में हमसे समता का व्यवहार नहीं करते। रौद्र रुप धारण करने वाले रुद्र भी छोटे–छोटे अपराधों पर हम पर नाराज होते हैं। आराध्यों में एकमात्र आप ही शेष रहीं जो मरुभूमि में विराज कर भक्तों की कामना पूरी करती हैं॥24॥

**एवं सर्वैः स्तुता देवी प्राह प्रीता महेश्वरी।**
**काश्यपेयाः शृणुध्वं भोः सर्वेषां हितकारकम् ॥25॥**

इस प्रकार सभी के स्तुति किये जाने पर महादेवी प्रसन्न होकर बोली–हे कश्यपपुत्रो ! देव–दानवों सभी के लिए हितकर मेरा उपदेश सुनो ॥25॥

**यद्यूयं बलसंदृप्ताः अनभ्यर्च्य गणाधिपम्।**
**तथैव वास्तुपुरुषं तथा मातृगणं मम ॥26॥**

जैसा कि आपने बलगर्वित होकर गणपति वास्तुपुरुष व मेरे मातृगणों की अर्चना किये बिना ही ॥26॥

**समुद्रमथने यूयं प्रवृत्तास्तेन हेतुना।**

**विफलोऽभूच्छ्रमो ह्यस्मान्न कार्यं चेदृशं क्वचित् ॥27॥**

समुद्रमंथन करना शुरु किया, तो सारा परिश्रम व्यर्थ हो गया, ऐसा (वन्दना-अर्चना से रहित) अमांगलिक कार्य कभी नहीं करना चाहिए ॥27॥

**ये नार्चयन्ति गणपं वास्तुमातृगणग्रहान् ।**
**ते सन्तु मोघकर्माणो मूढा विघ्नगणाकुलाः ॥28॥**

जो लोग गणपति, वास्तु, मातृका एवं ग्रहादि का मंगलाचरण वन्दन किये बिना कार्य करेंगे, वे मूर्ख विघ्नों से घिरे जाकर, व्यर्थ कार्य करने वाले होंगे। अर्थात् उनके ऐसे समस्त कार्य निष्फल होंगे ॥28॥

**अभ्यर्च्यैतान् सदा कार्यं शुभं कर्म यदीप्सितम्।**
**आसुरं चान्यथा तत्स्यादित्येतन्मेऽनुशासनम् ॥29॥**

नित्य इनकी मंगल पूजा-अर्चना करके ही इच्छित कार्य करना चाहिए। मेरा यही उपदेश है। अन्यथा वह कर्म राक्षसी होगा ॥29॥

**अथाभ्यर्च्य सुरानेतान् गृह्णन्तु च सुधादिकम् ।**
**इत्युक्त्वा सा ततो देवी तत्रैवान्तरधीयत ॥30॥**

इसलिए इन देवों की अर्चना-वन्दना पूर्वक ही अमृत-रत्नादि प्राप्त करें। इस प्रकार आज्ञा देकर भगवती वहीं अन्तर्धान हो गई ॥30॥

**नारद उवाच ॥31॥**

॥ नारद बोले ॥31॥

**दधिमथ्या वचः श्रुत्वा समभ्यर्च्य गणादिकम्।**
**नवरात्रव्रतं चक्रुरिन्द्राद्यास्ते सुरर्षयः ॥32॥**

इस प्रकार दधिमथी के वचन सुनकर और देवतागणों का पूजन करके इन्द्रादिक देवों और ऋषिगणों ने नवरात्र व्रत आरंभ किया ॥32॥

**सिन्धुजातां सुधां पीत्वा जातास्ते ह्यजरामराः ।**
**दधिमथ्याः प्रसादेन पुनः स्वर्गमवाप्नुवन् ॥33॥**

वे सागर से उत्पन्न अमृत का पान करके अमर हो गए। उन्होंने दधिमथी की

कृपा से फिर से स्वर्ग प्राप्त कर लिया ॥33॥

**इत्थं ते कथितं सर्वं तातोक्तं व्रतमुत्तमम्।**
**सद्यः समारभे ब्रह्मन् साम्प्रतं भक्तिभावतः ॥34॥**

इस प्रकार से पिता ब्रह्माजी द्वारा वर्णित उत्तम व्रत मैंने आपको बतला दिया। अब तत्काल ही भक्तिभावना सहित आप व्रतारंभ करें ॥34॥

**व्रतस्यास्य प्रभावेण श्रेष्ठं पुत्रमवाप्स्यसि।**
**लब्ध्वा चाखंडमैश्वर्यं वंशवृद्धिमवाप्नुयाः ॥35॥**

इस उत्तम व्रत के प्रभाव से आप श्रेष्ठ पुत्र प्राप्त करेंगे और अखण्ड ऐश्वर्य को प्राप्त करेंगे एवं आपकी वंशवृद्धि होगी ॥35॥

**वशिष्ठ उवाच ॥36॥**

वशिष्ठ बोले ॥36॥

**सत्कृतोऽथर्वणा तत्र सुरर्षिर्नारदो मुनिः।**
**श्रावयित्वेति माहात्म्यं तत्रैवान्तरधीयत॥37॥**

अथर्वण ऋषि द्वारा सम्मानित देवर्षि नारद इस प्रकार व्रत–माहात्म्य बतलाकर वहीं अन्तर्धान हो गये ॥37॥

**इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये दधिमथीनामप्राप्ति–**

**वर्णनोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥**

दधिमथीपुराण में वर्णित दधिमथीनामप्राप्तिवर्णन– विषयक, **चौथा अध्याय** पूर्ण हुआ

## पञ्चमोऽध्यायः

**वशिष्ठ उवाच ॥1॥**

वशिष्ठ बोले ॥1॥

**ततस्तौ दम्पती भक्त्या पुत्रकामौ हिमाचल ।**
**नारदोक्तविधानेनाकुरुतां व्रतमुत्तमम्॥2॥**

हे हिमाचल ! तब से ही वे पति–पत्नी पुत्र की कामना से भक्तिपूर्वक नारदोक्त विधान से उत्तम व्रत करने लगे ॥2॥

**तद्व्रतस्य प्रभावेण श्यामा चाश्विनशुक्लके।**
**महाष्टम्यां तिथौ पुण्ये मध्याह्ने शुक्रवासरे ॥3॥**

उस व्रत के प्रभाव से आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पवित्र अष्टमी तिथी शुक्रवार को मध्याह्न में ॥3॥

**सहस्रविद्युत्सङ्काशा देवी प्रादुर्बभूव ह।**
**तस्याः दर्शनमात्रेण हर्षयुक्तौ च दम्पती॥4॥**

हजारों बिजलियों के समान प्रभाव वाली देवी श्यामा प्रकट हुई, जिसके दर्शन–मात्र से ही पति–पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हुए ॥4॥

**प्रसन्नचेतसौ जातौ सहसा च समुत्थितौ ।**
**नमस्कृत्य ततो देवीं स्तुतिं चक्रतुरुत्तमाम्॥5॥**

वे दोनों प्रसन्नचित्त होकर देवी के स्वागतार्थ खड़े हो गए और देवी को नमस्कार करके, उत्तम स्तुति करने लगे ॥5॥

**अथर्वण उवाच ॥6॥**

अथर्वण ऋषि बोले ॥6॥

**विश्वम्पालयसे नित्यं गुणैः सत्त्वादिभिः क्रमात्।**
**व्यक्ताव्यक्तप्रभावेण स्थिति–संहार–कारिणि॥7॥**

हे देवी ! आप सत्वादि गुणों से विश्व की नित्य पालना करती हैं, और व्यक्त–अव्यक्त प्रभाव रूप से क्रमशः सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार करने वाली हैं ॥7॥

**त्रयोविंशतितत्त्वेषु न त्वां जानन्ति योगिनः ।**
**देवास्त्रयो विमुह्यन्ति मुनयश्च तपोधनाः ॥8॥**

तेईस तत्त्वों में योगी जन भी आपको नहीं जान सकते, तीनों देव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) व तपोधन मुनिजन भी मोहित हो जाते हैं ॥8॥

प्रसीद त्वं महादेवि भक्तानां वरदायिनि।
शारदां त्वां महाशक्तिं भूयो भूयो नमाम्यहम्॥9॥

हे महादेवी ! आप भक्तों के लिए वरदायिनी हैं, आप प्रसन्न होवें, आप महाशक्ति शारदा को मैं बारम्बार नमस्कार करता हूँ ॥9॥

**वशिष्ठ उवाच ॥10॥**

॥ वशिष्ठ बोले ॥10॥

**एवं तस्य स्तुतिं श्रुत्वा चाशीर्वादान् ददौ शुभान् ।**
**हिमवन्शैलराजेन्द्र ! ततो देवी ह्युवाच तम् ॥11॥**

देवी ने इस प्रकार उनकी स्तुति सुनकर, शुभाशीर्वाद दिए। हे पर्वतराज हिमालय! तत्पश्चात् देवी ने कहा ॥11॥

**देव्युवाच ॥12॥**

देवी बोली ॥12॥

**हे हेऽथर्वस्त्वया ब्रह्मन्नवरात्रं कृतं व्रतम् ।**
**तत्प्रभावात्प्रसन्नास्मि वरं प्रार्थय चेप्सितम् ॥13॥**

हे ब्रह्मन् अथर्वन्! तुमने नवरात्र-व्रत किया है, उसी व्रत के प्रभाव से मैं तुम पर प्रसन्न हूँ, तुम इच्छित वरदान मांगो ॥13॥

**वशिष्ठ उवाच ॥14॥**

वशिष्ठ बोले ॥14॥

**ततो देव्या वचः श्रुत्वा जातहर्षो महामुनिः।**
**बद्धाञ्जलिर्नमस्कृत्य ह्यथर्वा वाक्यमब्रवीत् ॥15॥**

तब देवी के वचन सुनकर परम प्रसन्न महामुनि अथर्वा ने हाथ जोड़ करके नमस्कार किया और इस प्रकार से वचन कहे ॥15॥

**अथर्वोवाच ॥16॥**

अथर्वा बोले ॥16॥

**यदि देवी प्रसन्नासि जगदम्ब ! ममोपरि।**
**निश्चितं यन्मया पूर्वं वरमेकं ददस्व मे ॥17॥**

हे देवी ! जगदम्बिके ! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो आप मेरे द्वारा पूर्व से निश्चित किया गया एक वरदान दीजिए ॥17॥

**विद्यावन्तं यशस्वन्तं सर्वशास्त्रविशारदम् ।**
**दानशीलं गुणोपेतं सत्यधर्मपरायणम् ॥**
**दृढ़व्रतं कृतज्ञञ्च वंशवृद्धिकरं सदा ।**
**तव भक्तिरतं पुत्रं देहि मे चातिसुन्दरम्॥18-19॥**

मुझे विद्यावान्, यशस्वी, सभी शास्त्रों का ज्ञाता, दानशील, सभी गुणों से युक्त, सत्यधर्मपरायण, वंश-वृद्धि करने वाला, दृढव्रत, कृतज्ञ, सदा आपकी भक्ति करने वाला और अत्यन्त सुन्दर पुत्र प्रदान करें ॥18-19॥

**तस्येदं वचनं श्रुत्वा देवी प्राह शुचिस्मिता।**
**दुर्लभं याचितम्ब्रह्मन्दास्ये पुत्रं तथापि ते॥20॥**

उनका यह वचन सुनकर, मधुर मुस्कुराहट के साथ देवी बोली-हे ब्रह्मन्! यद्यपि तुमने दुर्लभ वर मांगा है, तथापि तुम्हें-पुत्र प्रदान करूँगी ॥20॥

**इति देव्या वचः श्रुत्वा शान्तिः स्वामिनमब्रवीत्।**
**त्वया पुत्रवरो लब्धः पुरुषाः पुत्रवल्लभाः॥21॥**

इस प्रकार देवी का वचन सुनकर शान्ति ने पति से कहा कि पुरुष पुत्रप्रेमी होते हैं, इसलिए आपने पुत्रप्राप्ति का ही वरदान माँगा॥21॥

**स्त्रीणां प्रियतमा कन्या सर्वसौख्यकरी सदा।**
**प्रार्थयस्व पुनस्तन्मे कन्यामेकां महाद्युतिम्॥22॥**

स्त्रियों के लिए नित्य सर्वसुखदायिनी व सर्वाधिक प्रिया कन्या ही होती है; अतः आप मेरे लिए एक तेजस्विनी कन्या की प्राप्ति हेतु पुनः प्रार्थना कीजिये॥22॥

**शान्तेरिदं वचः श्रुत्वा प्रत्युवाच महामुनिः।**
**नवरात्रव्रते पुण्ये कृतो बहुपरिश्रमः॥23॥**

इस प्रकार पत्नी शान्ति का वचन सुनकर महामुनि ने कहा– तुमने नवरात्र में पवित्रव्रत के पालन में बहुत परिश्रम किया है॥23॥

**पातिव्रतेषु धर्मेषु तुष्टोऽस्मि तव सेवया।**
**प्रार्थयेऽहं पुनर्देवीं कामान्सा पूरयिष्यति ॥24॥**

पातिव्रत्य धर्मानुसार तुम्हारी सेवाओं से मैं सन्तुष्ट हूँ। देवीजी से मैं पुनः प्रार्थना करता हूँ। वे हमारी समस्त कामनाएँ पूर्ण करेंगी ॥24॥

**शान्तिमित्थं समाश्वास्य ह्यथर्वा बहुभाग्यवान्।**
**साष्टाङ्गं प्रणिपत्यासौ स्तुतिं चक्रे तथोत्तमाम् ॥25॥**

महाभाग्यशाली अथर्वा ऋषि ने शान्ति को बहुत आश्वासन दिया, और देवीजी को साष्टांग प्रणाम करके उनकी उत्तम स्तुति आरंभ की ॥25॥

**बहुधा स्तूयमाना च तुष्टा सा परमेश्वरी।**
**कृपया परयाविष्टा प्रत्युवाच महेश्वरी ॥26॥**

वह परमेश्वरी स्तुति करने पर सन्तुष्ट और परम कृपालू होकर कहने लगीं ॥26॥

**भो भो ऋषे प्रसन्नाऽस्मि तव भक्त्या मुहुर्मुहुः।**
**यदीच्छसि पुनर्ब्रह्मन्वरं वरय चोत्तमम् ॥27॥**

हे ऋषि ! मैं आपकी इस परम भक्ति से अत्यन्त प्रसन्न हूँ। हे ब्रह्मन्! आप जो भी उत्तम वरदान मुझसे चाहते हैं, मांग लीजिए ॥27॥

**अथर्वण उवाच ॥28॥**

अथर्वण बोले ॥28॥

**तवाऽमृतवचः श्रुत्वा सफला मे मनोरथाः।**
**आनन्दः सुमहाञ्जातः परं शान्तिर्न हर्षिता ॥29॥**

हे देवी ! आपके अमृतवचन सुनकर, मेरे मनोरथ सफल हो गए, मुझे परमानन्द प्राप्त हो गया है, किन्तु शान्ति प्रसन्न नहीं है ॥29॥

**तस्मात्त्वं कृपया देवी ! वरं भूयः प्रयच्छ मे ।**
**शान्त्यै हर्षप्रदानार्थं कन्यां देहि त्वया समाम्॥30॥**

अतः हे देवी ! आप कृपा करके पुनः वरदान दें। शान्ति को प्रसन्नता देने के लिए, आपके समान कन्या प्रदान कीजिए ॥30॥

**देव्युवाच ॥31॥**

देवी ने कहा ॥31॥

**श्रूयतामृषिशार्दूल ! जनिष्यामि गृहे तव ।**
**सुता तेऽहं भविष्यामि करिष्ये तव कांक्षितम् ॥32॥**

हे ऋषिवर ! सुनिये मैं ही आपके घर में जन्म लेकर, आपकी पुत्री बनकर आपका अभीष्ट करूँगी ॥32॥

**प्रसन्नो भव गच्छ त्वं पत्न्याः संरक्षणङ्कुरु॥33॥**

आप प्रसन्न होकर जाएं और पत्नी को आश्वस्त कर उसका पालन करें ॥33॥

**इति श्री दधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये वरप्राप्तिवर्णनो नाम पञ्चमोऽध्यायः**

श्री दधिमथीपुराण में देवीमाहात्म्य से वरप्राप्तिवर्णननामक **पांचवा अध्याय** पूर्ण हुआ।

## षष्ठोऽध्यायः

**वशिष्ठ उवाच॥1॥**

वशिष्ठ बोले ॥1॥

**तथेति स प्रतिज्ञाय शान्तिं दृष्ट्या व्यलोकयत् ।**
**महर्षेर्वीक्षणाच्छान्त्या गर्भे देवी विवेश ह ॥2॥**

अथर्वण ऋषि ने ऐसा ही होगा, इस प्रकार से प्रतिज्ञा की और शान्ति के सप्रेम दर्शन किये। महर्षि के आदर्श दृष्टिनिक्षेप मात्र से ही देवी भगवती ने गर्भ में प्रवेश किया ॥2॥

**कालेन सा जगद्धात्री प्रादुर्भूता तडित्प्रभा ।**
**दध्यब्धौ सा समायाता यत्राऽस्ते दानवो महान्॥3॥**

समय आने पर जगन्माता विद्युत्कान्तिमय शरीर से प्रकट हुयी और जहाँ दानव विकटासुर रहता था, उस दधिसागर में पहुँच गयी ॥3॥

**तत्र सा विनिमज्याथ ददार विकटाननम् ।**
**तस्योदरं त्रिशूलेन भित्वान्त्राणि समग्रहीत् ॥4॥**

वहां देवी ने दधिसागर में डुबकी लगाकर अपने त्रिशूल से विकटासुर को विदीर्ण करके आन्तों को खींच लिया ॥4॥

**विश्वेऽरुग्णे ततो ब्रह्मा तुष्टाव जगदीश्वरीम् ।**
**दधिनिर्मथनाद्देवि त्वं तु दधिमथी भव ॥5॥**

विश्व के भयमुक्त हो जाने पर ब्रह्माजी ने जगदीश्वरी की स्तुति की और निवेदन किया कि दधिसागरमंथन करने के कारण आप दधिमथी नाम से सुविख्यात हों॥5॥

**शिपिविष्टश्च ते भर्ता पिताऽथर्वा मुनिस्तव।**
**दध्यङ्ऋषिस्तव भ्राता शिवभक्तो निरन्तरम्॥6॥**

श्री विष्णु आपके भर्ता व अथर्वण मुनि आपके पिता एवं निरन्तर शिवभक्त महर्षि दधीचि आपके भ्राता होंगे ॥6॥

**तस्य संरक्षणं देवि कर्त्तव्यं शाश्वतं त्वया।**
**सृष्टिपालनकर्त्री त्वं सृष्टिसंहारकारिणी॥7॥**

हे देवी ! आप संसार का पालन करने वाली और संहारकारिणी हैं, अतः आप उन दधीचि का निरन्तर संरक्षण करें॥7॥

**त्वं क्षमा त्वं धृतिः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिः क्रिया मतिः।**
**त्वं स्वाहा त्वं स्वधा लज्जा प्रसीद परमेश्वरी॥8॥**

क्योंकि आप क्षमा, धृति, शान्ति, कान्ति, तुष्टि, क्रिया व मति रूपा हैं। आप स्वाहा स्वधा और लज्जारूपिणी भी हैं। हे परमेश्वरी! आप प्रसन्न होवें ॥8॥

**दध्यङाथर्वणस्यास्य कुलदेवी भवाधुना।**
**तथेति सा प्रतिज्ञाय दधीचेः सन्निधौ गता॥9॥**

हे देवी ! आप अथर्वणपुत्र इस दधीचि के वंश की कुलदेवी मान्य होवें। अच्छा

ऐसा ही होवे इस प्रकार से प्रतिज्ञा करके दधिमथीमाता महर्षि दधीचि के पास पहुँचीं ॥9॥

**श्री दधीचिरुवाच ॥10॥**

दधीचि बोले ॥10॥

**ॐ ह्रींश्रीं ऐँ क्लीं सौं भगवत्यै दधिमथ्यै नमः ॥11॥**

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौं भगवत्यै दधिमथ्यै नमः॥11॥

**पिप्पलाद उवाच ॥12॥**

पिप्पलाद बोले ॥12॥

**ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दधिमथ्यै नमः॥13॥**

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री दधिमथ्यै नमः॥13॥

**दाधीचा ऊचुः॥14॥**

दाधीच बोले ॥14॥

**संविद्रूपा ज्योतिराद्या स्फुरन्ती, ब्रह्माण्डानां कोटिभिः क्रीडमाना।**
**स्वात्मारामा दिव्यरूपापराख्या, देवी श्यामा सर्वदाऽस्मान्पुनातु॥15॥**

संविद्‌रूपा, आद्या ज्योति, स्पन्दनसहिता, कोटि ब्रह्माण्डों से क्रीड़ा करने वाली, स्वतंत्र आत्मविहारिणी, परात्परा, दिव्यरूपा श्यामा देवी सदा सर्वदा हमें पवित्र करती रहें ॥15॥

**ॐ ह्रींकारा महामाया स्वतन्त्रा चेतना परा।**
**कलातीता कलारूपा बैन्दवी नादरूपिणी ॥16॥**

**प्रणवा प्रकृतिः प्राज्ञा तैजसी विश्वधारिणी।**
**महालक्ष्मी र्महाकाली महावागीश्वरी रमा॥17॥**

ॐ ह्रींकारा, महामाया, परावाणीरूपा, स्वतंत्र, चैतन्यरूपा, सभी कलाओं से परे, कलात्मिका, बिन्दुनादरूपिणी, ओम्‌कारा, बुद्धिरूपिणी, विश्वधारिणी, तेजस्विनी आप महालक्ष्मी, महाकाली, महासरस्वती और रमा हैं॥16-17॥

**राजराजेश्वरी प्रज्ञा सिद्धा च ललिता ध्रुवा।**
**पराभट्टारिका दिव्या कुलकुण्डैकशायिनी ॥18॥**

आप राजराजेश्वरी, सिद्धा, ललिता, ध्रुवा, सर्वोत्तमा, सूर्य–कान्ति सदृश दिव्या, कुलकुण्डलिनीशायिनी हैं ॥18॥

**श्यामा रामा प्रमा कामा उमा माहेश्वरीश्वरी।**
**भोगदा भुवना वाणी भारती च ऋतम्भरा॥19॥**

**संध्या सरस्वती गोत्रा मोहिनी ऋतुजा ऋचा।**
**सामा ह्यथर्वणा वेदी याजुषी वेदसंस्तुता॥20॥**

आप श्यामा रामा, प्रभा, कामा, उमा, माहेश्वरी, भोगदायिनी, भुवनेश्वरी, वाणी, सरस्वती, ऋतम्भरा, गोत्रा, पार्वती, मोहित करने वाली, ऋतुजा, ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद मंत्रस्वरूपिणी वेदों द्वारा स्तुति की जाने वाली हैं ॥19–20॥

**पुराणा चेतिहासा च निगमा चागमा समा।**
**गतिर्मतिर्मुक्तिदा च चिन्तामणिरधोक्षजा॥21॥**

पुराण, इतिहास, निगम और आगम आपके ही रूप हैं। आप सबके लिए समान हैं। आप गति, मति और मुक्ति देने वाली हैं। आप चिन्तामणि और वैष्णवी हैं ॥21॥

**शुभा श्रेयस्करी भूमिशिखा तरुणविग्रहा।**
**हंसो हंसात्मिका सोऽहंभवा भावात्मिका सुधा॥22॥**

आप शुभा, श्रेयस्करी, भूमि, ज्वाला, तरुणस्वरूपवाली, ब्रह्म, आत्मा तथा सोऽहं मन्त्र से उत्पन्न भावसुधा हैं।॥22॥

**अणिमा महिमा प्राप्तिरीशिता वशिता क्षमा।**
**नित्यानन्दघना मेधा स्मृतिर्ह्रीर्भीः कुलाङ्गना ॥23॥**

आप अणिमा, महिमा, प्राप्ति, ईशिता, वशिता, क्षमा, नित्य, आनन्दघन, मेधा, स्मृति, लज्जा, भीति और कुलांगना हैं ॥23॥

**त्रिकूटा च त्रिबीजा च गायत्री च शताक्षरी।**
**मृत्युञ्जया जातवेदाः सावित्री व्याहृतिः क्रमा॥24॥**

त्रिगुण (ऐं, ह्रीं, क्लीं), त्रि बीजाक्षर गायत्री रूपा, शताक्षरी मृत्युञ्जया, अग्नि, सावित्री, व्याहृति और क्रम रूपा आप ही हैं ॥24॥

**एकाक्षरी त्र्यक्षरी च चतुःषष्टिः स्वरात्मिका।**
**माता दधिमथी सिन्धुक्षोभिणी कुलदेवता॥25॥**

एकाक्षरी, त्र्यक्षरी, चौंसठ स्वर वाली गायत्री, सागरमन्थिनी, माता दधिमथी कुलदेवी आप ही हैं ॥25॥

**गोष्ठेश्वरी मङ्गला च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखा।**
**वैनायिकी वैष्णवी च सौरी शैवी स्वयंभुवी॥26॥**

आप ही समाज की स्वामिनी, चारों तरफ आँखें मस्तक व मुखों को धारण करने वाली मंगला हैं । विनायक, विष्णु सूर्य, शिव और ब्रह्मा की शक्तियाँ आप ही हैं ॥26॥

**सर्वदा सर्वरूपा च ब्रह्मादिजननी परा।**
**इति नाम्नां शतं देव्या अष्टाधिकमथोत्तरम्॥27॥**

आप नित्या, सर्वरूपा, ब्रह्मादि की उत्पादिका, पराशक्ति हैं इस प्रकार देवीजी के 108 नामों से उनकी स्तुति की ॥27॥

**इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये दाधीचकृतस्तुति वर्णनोनाम षष्ठोध्यायः॥**

श्री दधिमथी पुराण के दधिमथीदेवीमाहात्म्य में दाधीचों द्वारा स्तुति वर्णन नामक छठा अध्याय पूरा हुआ ।

## सप्तमोऽध्यायः

**हिमवानुवाच॥1॥**

हिमालय बोले ॥1॥

**महर्षे यत्त्वया चोक्तं विकटाख्यो हतोऽम्बया।**
**कोऽसौ दैत्यो हि विकटो युगे कस्मिन्बभूव ह॥2॥**

हे महर्षि ! आपने कहा कि विकटासुर का अम्बिका जी ने वध किया। विकट नामक दैत्य किस युग मे पैदा हुआ ? वह कौन था? ॥2॥

भूयः कथय विप्रर्षे देव्या अद्भुत-विक्रमम्।
सर्वां तां श्रोतुमिच्छामि देवीलीलां सविस्तराम्॥3॥

हे ब्रह्मर्षि! देवी के अद्भुत पराक्रम का पुनः सविस्तार वर्णन करें। मैं देवी की सम्पूर्ण लीला को विस्तार से सुनना चाहता हूँ॥3॥

**वशिष्ठ उवाच ॥4॥**

वशिष्ठ बोले ॥4॥

सम्यक्पृष्टं त्वया शैल देव्या लीलाविलासनम्।
विकटाख्यस्य दैत्यस्य ह्युत्पत्तिं शृणु सांप्रतम्॥5॥

हे पर्वतराज! आपने देवीजी के लीला विलास से सम्बन्धित उत्तम प्रश्न किया है, अतः अब आप विकटासुर दैत्य की उत्पत्ति के विषय में सुनिये ॥5॥

पुरा कृतयुगे राजन् विकटाख्यो हि दानवः।
आदिदैत्यकुलोद्भूतः शौर्यवांश्च महाबलः ॥6॥

विकटासुर नाम से प्रसिद्ध दानव सत्ययुग में हुआ था, वह आदि दैत्यकुल में उत्पन्न महाबलशाली और शूरवीर था ॥6॥

विकटाभिधया ख्यातः महावीर्यपराक्रमः।
उत्कटश्च महाक्रोधी देवब्राह्मणकण्टकः॥7॥

विकटासुर पराक्रमी, अत्युग्र, महाक्रोधी व देव ब्राह्मणों के लिए कष्टकारक था॥7॥

सिंहासनसमारूढो दैत्येशो विकटासुरः।
निरतो राजकार्येषु त्रिलोक्या बुभुजे श्रियम्॥8॥

दैत्यराज विकटासुर सिंहासन पर बैठकर राजकार्यों में लग गया व त्रैलोक्य की राज्य-लक्ष्मी का उपभोग करने लगा ॥8॥

तथाऽपि कामुकः क्रोधात् पीडयामास देवताः।
पापानि चातिघोराणि व्यकरोदतितृष्णया॥9॥

तथापि वह बहुत कामासक्त हो गया। क्रोधी बनकर देवगणों को पीड़ित करने लगा। अति तृष्णासक्त होकर पापाचारी बन गया॥9॥

भृशं मृत्यूग्रदण्डेन प्रजानां धनमाहरत्।
परदाराभिगन्ताभूद् द्यूतक्रीडारतः सदा ॥10॥

वह बहुत उग्र दण्डधर बनकर प्रजाजनों का धन हरण करने लगा। वह व्यभिचार और द्यूतक्रीड़ा में रत रहता था॥10॥

जीवहिंसारतो नित्यं मद्यपानपरायणः।
अभक्ष्यभक्षणङ्कुर्वन् प्रवृत्तः पापकर्मणि ॥11॥

वह नित्य जीवहिंसारत, मद्यपान आदि दुर्गुणों से युक्त, अभक्ष्यभोजी और पापकर्मी था ॥11॥

तथापि बहुवर्षाणि बुभुजे राज्यमुत्तमम्।
तप्यमानाः सुरास्तस्माद्गोविन्दं शरणं गताः ॥12॥

तो भी वह बहुत वर्षों तक राज्य भोगता रहा। उससे संतप्त होकर देवगण भगवान् गोविन्द की शरण में पहुँच गये ॥12॥

सादरं प्रणिपत्यैवं दुःखं सर्वं न्यवेदयन्।
विकटो दानवः कश्चिल्लब्धब्रह्मवरो महान्॥13॥

श्री गोविन्द को सादर प्रणाम कर सभी ने अपने दुःख को उनसे कहा कि विकटासुर दैत्य ने ब्रह्माजी से महान् वरदान प्राप्त किया है ॥13॥

अधुना तेन बहुधा पीडिताः स्मो वयं विभो।
दैत्यं नाशयितुं शीघ्रमुपायं ब्रूहि साम्प्रतम्॥14॥

हे विभो ! आजकल हम उसी के द्वारा बहुत दुःखी हो रहे हैं। अब आप उस दैत्य के नाश का अतिशीघ्र ही उपाय बतायें॥14॥

विष्णुरुवाच ॥15॥

विष्णु बोले ॥15॥

यदा ब्रह्मवरो लब्धो मायया मोहितस्तदा।
पुंसां किञ्चिद्भयं ज्ञात्वा ययाचे पुरुषाऽभयम्॥16॥

जब वह ब्रह्मा से वरदान प्राप्त कर रहा था, तब मेरी माया से मोहित हो रहा था। उसने पुरुषों से कुछ भय जानकर उनसे अभय का वरदान मांगा ॥16॥

**अबलाभ्योऽभयं ज्ञात्वा ययाचे पुरुषाऽभयम्।**
**कथञ्च तं समर्थोऽस्मि वरं कर्तुमहोऽन्यथा॥17॥**

उसने स्त्रियों से अपने को निर्भय मानकर के पुरुषों से ही अभय का वरदान मांगा। उस ब्रह्मप्रदत्त वरदान को मैं किस प्रकार निष्फल कर सकता हूँ॥17॥

**मत्वा मे वचनं यूयं शरणं गच्छताम्बिकाम्।**
**योगमाया महालक्ष्मीर्जाता साऽथर्वणो गृहे ॥18॥**

मेरा कथन मानते हुये आप सब लोग जगदम्बिका की शरण में जायें। जो योगमाया महालक्ष्मी अथर्वण महर्षि के घर में उत्पन्न हुयी हैं॥18॥

**तामेव शरणं यात सा तं दैत्यं हनिष्यति।**
**आदिशक्तिर्महामाया युष्मत्कार्यं करिष्यति ॥19॥**

वे आदिशक्ति, महामाया उस दैत्य का वध करके आपका कार्य सिद्ध करेंगी। अतः आप सब लोग उन्हीं की शरण ग्रहण करें॥19॥

**॥इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये विकटासुरराज्यवर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः॥**

॥ श्रीदधिमथीपुराण के दधिमथीमाहात्म्य में विकटासुरराज्यवर्णन नामक सातवां अध्याय पूर्ण हुआ॥

## अष्टमोऽध्यायः

**वशिष्ठ उवाच ॥1॥**

वशिष्ठ बोले ॥1॥

**विष्णोरेवं वचः श्रुत्वा मोदमानाः सुरादयः।**
**सत्वरश्च ययुः सर्वे तस्मिन्नाथर्वणाश्रमे ॥2॥**

इस प्रकार श्री विष्णु का कथन सुनकर सभी देवादि प्रसन्न होकर अतिशीघ्र ही उस अथर्वण महर्षि के आश्रम में गये ॥2॥

**पुण्ये ऋष्याश्रमे रम्ये मुग्धाः सर्वे दिवौकसः।**
**देवीं पद्मासने दृष्ट्वा स्थितां दधिमथीं मुदा ॥3॥**

उस पवित्र आश्रम में पहुँच कर देवताओं ने कमलासन पर विराजित श्रीदधिमथी देवी का दर्शन किया। प्रसन्नता से...॥3॥

**बद्धाञ्जलिपुटा देवाः साष्टाङ्गं प्रणिपत्य च।**
**पूजां कर्तुं समारब्धा पत्रपुष्पफलादिभिः॥4॥**

दोनों हाथ जोड़कर देवों ने देवी दधिमथी को साष्टांग प्रणाम कर पान, पुष्प, फलादि से देवी का पूजन आरम्भ किया॥4॥

**अक्षतैश्चन्दनैस्तोयैर्धूपैर्दीपैः सुगन्धिभिः।**
**नानाविधैश्च नैवेद्यैरानर्चुर्विधिपूर्वकम्॥5॥**

उन्होंने चावल, जल, धूप, दीपादि से व अनेक सुगन्धित पदार्थों एवं विविध नैवेद्यों से विधिविधान-पूर्वक पूजन किया॥5॥

**प्रसन्नमानसा राजन् स्तवं चक्रुः सुरादयः।**
**जगुर्मङ्गलगीतानि नानावाद्यस्वनैः सह ॥6॥**

हे राजन् ! देवों ने प्रसन्न मन से स्तुतियों के साथ अनेक मंत्रों की ध्वनियों के साथ मंगलगीतों का गान किया ॥6॥

**देवा ऊचुः॥7॥**

देवता बोले ॥7॥

**महालक्ष्मि ! महामाये ! मूलप्रकृतिरूपिणि!।**
**आदिशक्त्यै पराम्बायै दधिमथ्यै नमो नमः॥8॥**

हे देवी ! आप महालक्ष्मी महामाया, मूलप्रकृतिरूपा हैं। आप श्रीदधिमथी पराम्बा महाशक्ति हैं। आपके लिए हमारा बारम्बार नमस्कार है॥8॥

**गुणरूपे जगन्मातर्ब्रह्मब्रह्माण्डकारिणि।**
**नमो वैकुण्ठवासिन्यै दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते॥9॥**

हे जगज्जननी! आप त्रिगुणस्वरूपा व ब्रह्मा सहित ब्रह्माण्डों की रचनाकारिणी हैं। वैकुण्ठनिवासिनी श्रीदधिमथीजी! आपके लिए नमस्कार है ॥9॥

क्षीयन्ते च यदा धर्मा अधर्माश्चोल्लसन्ति च।
तदावतारं गच्छन्त्यै दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते॥10॥

जब धर्म क्षीण हो जाते हैं और पाप बढ़ जाते हैं तब अवतार धारण करने वाली श्रीदधिमथीजी! आपके लिए नमस्कार है ॥10॥

गो-विप्र-सुर-रक्षार्थं या लोकेऽवतरत्यलम्।
नताः स्मस्त्वां वयं देवि दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते॥11॥

गौ-ब्राह्मण व देवगणों की पूर्ण सुरक्षा के लिए आपने संसार में दधिमथी का अवतार लिया है। हे महादेवी ! हम सब आप को प्रणाम करते हैं॥11॥

दधिनिर्मथनाद्देवि त्वं मा दधिमथी स्वयम्।
नित्यानन्दघनायै ते दधिमथ्यै नमोऽस्तु वै॥12॥

दधिसागर के निर्मन्थन किये जाने से ही आप स्वयं महालक्ष्मी दधिमथी नाम से सुविख्यात हुईं। हे मातेश्वरी, दधिमथी! नित्य प्रगाढ परमानन्दस्वरूपा आपको नमस्कार है ॥12॥

अदादमृतमस्मभ्यं देवेभ्योऽम्बुधिमन्थनात्।
राजराजेश्वरी तस्यै दधिमथ्यै नमो नमः॥13॥

सागर-मंथन से प्राप्त अमृत को हम सब देवगणों के लिए प्रदान करने वाली, राजराजेश्वरी दधिमथी! आपके लिए नमस्कार है ॥13॥

महोदधिसमुद्भूते क्षीरसागरकन्यके।
महालक्ष्मीनामवत्यै दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥14॥

महासागर में उत्पन्न, क्षीरसागर की कन्या, महालक्ष्मी नाम वाली आप दधिमथी के लिए नमस्कार है॥14॥

मेदस्विनी कृता भूमिर्हतौ तौ मधुकैटभौ।
जगदम्बा तदाख्याता दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते॥15॥

आपके द्वारा मधुकैटभ मार दिये गये। भूमि मेदस्विनी बना दी गई। तब आप जगदम्बा नाम से विख्यात हुईं। आप दधिमथी माता के लिए नमस्कार है ॥15॥

शुम्भं निशुम्भं जित्वा च दुर्गतिर्नाशिता पुरा।
रक्षिताश्च वयं दुर्गे दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते॥16॥

पूर्व काल में आपने ही शुम्भ-निशुम्भ को जीतकर सभी की दुर्गति का नाश किया। हमारी सुरक्षा करने वाली आप दधिमथी के लिए हमारा नमस्कार है॥16॥

पूर्वङ्कोलासुरं हत्वा लक्ष्मीर्नाम धृतं त्वया।
रक्षिताः कन्यकाधर्माः दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते॥17॥

प्राचीनकाल में आपने कोलासुर नामक दैत्य का वध करके लक्ष्मी नाम धारण किया। कन्याओं के धर्म की रक्षा करने वाली आप दधिमथी के लिए नमस्कार है ॥17॥

रक्तबीजविनाशार्थं कालीसंज्ञा धृता त्वया ।
भद्रकाल्यै महाकाल्यै दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥18॥

रक्तबीज के संहार के लिए आप काली कहलाईं। भद्रकाली महाकाली आप दधिमथी के लिए नमस्कार है ॥18॥

ध्वंसितौ चण्डमुण्डौ च तदा चण्डीति विश्रुता ।
चामुण्डा च तदा ख्याता दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥19॥

प्रचण्ड चण्ड-मुण्ड दानवों का विध्वंस करने के लिए आप चण्डी नाम से विख्यात हुईं। चामुण्डा कहलाने वाली आप दधिमथी को हमारा नमस्कार है॥19॥

लोकेभ्यो विजयं दत्वा विजयानामभूषिता ।
अस्मज्जयप्रदे देवि दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥20॥

लोकों को विजय दिलाने वाली आप विजया नाम से विभूषित हुयीं। हम सब की विजयदात्री दधिमथी के लिए हमारा नमस्कार है ॥20॥

महाविद्या तदाख्येया ह्यज्ञानतिमिरापहा ।
साक्षात्सरस्वतीरूपा दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥21॥

अज्ञानान्धकार दूर करने वाली आप महा दशविद्यारूपा प्रत्यक्ष सरस्वतीरूपा हुयीं। ऐसी आप दधिमथीजी के लिए नमस्कार है ॥21॥

**अव्यक्ता त्रिषु लोकेषु प्राणिनां शक्तिदायिनी ।**
**सर्वत्र व्यापिनी सूक्ष्मा दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥22॥**

अव्यक्तरूपा, तीनों लोकों के प्राणियों में शक्तिदायिनी व सर्वत्र व्यापिनी सूक्ष्मरूपा दधिमथीजी के लिए नमस्कार है ॥22॥

**सावित्री भारती गौरी गायत्री राधिका रमा ।**
**पतितोद्धारिके लक्ष्मि दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥23॥**

आप ही सावित्री, भारती, गौरी, गायत्री, राधिका व लक्ष्मी रूपा हैं। पतितोद्धार-कारिणी, लक्ष्मी दधिमथी जी ! आपके लिए नमस्कार है ॥23॥

**मृगेन्द्रवाहने देवि सर्वपापप्रणाशिनि ।**
**वरदे बुद्धिदे श्यामे दुष्टशत्रुविदारिणि ॥24॥**

हे सिंहवाहिनी देवी ! आप सभी पापों को नष्ट करने वाली, वरदायिनी, बुद्धिदायिनी, श्यामा व दुष्ट शत्रुओं का नाश करने वाली हैं ॥24॥

**त्वमेव सिद्धिदा गौरी भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी।**
**स्थूला सूक्ष्मा परानन्ता रौद्ररूपा जयप्रदा ॥25॥**

**महाशक्तिर्दधिमथी परा ब्रह्मस्वरूपिणी ।**
**रक्ताम्बरा सुरूपाढ्या नानाभरणभूषिता ॥26॥**

आप ही सिद्धियां देने वाली, गौरी, भुक्तिमुक्तिदात्री, स्थूल, सूक्ष्म, परा, अनन्ता, रौद्ररूपा व विजयदायिनी हैं। हे जयदायिनी। आप परा शक्ति दधिमथी ही ब्रह्मस्वरूपिणी, लालवस्त्रधारिणी अतिसुन्दरस्वरूपिणी व अनेक गहनों से सुशोभित हैं ॥25-26॥

**त्वमेव वैष्णवी रामा स्थितिसंहारकारिणी ।**
**जगतां धारिणी नित्यं लोककल्याणकारिणी ॥27॥**

आप ही विष्णुशक्ति, लक्ष्मी, विश्व की संचालक शक्ति व संहारक शक्ति और नित्य विश्व को धारण करने वाली तथा लोककल्याणकारी शक्ति भी हैं ॥27॥

**अधुनाऽनाश्रिता जाता ब्रह्मविष्णुशिवैरपि ।**
**त्वद्विना त्रिषु लोकेषु रक्षकोऽन्यो न विद्यते ॥28॥**

इस समय ब्रह्मा, विष्णु, शिव भी हमें आश्रय नहीं दे सकते। तीनों लोकों में आपके अलावा कोई भी रक्षिका नहीं ॥28॥

**प्रार्थयामह आर्तास्ते सेवका वयमीश्वरि !**
**यतो लब्धवरः कश्चिज्जातोऽसौ विकटासुरः ॥29॥**

हे मातेश्वरी ! हम आपके सेवक आर्त स्वर से आप से प्रार्थना कर रहे हैं कि विकटासुर नामक दानव ने वरदान प्राप्त कर रखा है ॥29॥

**दुःखेन तेन सन्तप्तास्त्वां वै शरणमागताः ।**
**जहि त्वं दानवं शीघ्रमस्माकं विजयं कुरु ॥30॥**

उसके दुःखों से दुखित हो हम आप की शरण में आ पहुंचे हैं। आप उस दानव का शीघ्र ही वध करके हमें विजयी बनावें ॥30॥

**मनसा कर्मणा वाचा प्राणिनो घ्नन्ति येऽसुराः ।**
**सकलान् जहि दुष्टाँस्तान्सर्वतोऽक्षिशिरोमुखे ॥31॥**

ये दानव मन वचन व कर्म से प्राणियों को मारते हैं। हे सभी तरफ नेत्रों व मुखों को धारण करने वाली माता उन सभी दुष्टों का संहार कीजिये ॥31॥

**पाहि पाहि महालक्ष्मि पाहि नः शरणागतान् ।**
**दुष्टदैत्यभयात्पाहि दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥32॥**

हे महालक्ष्मी ! हम शरणागतों की बार-बार रक्षा करें। दुष्ट दैत्यों के भय से हमारी रक्षा करने वाली देवी दधिमथी जी! हमारी पुनः पुनः रक्षा करें ॥32॥

**धनं धान्यं धरां धर्ममायुस्कीर्तिर्यशो बलम् ।**
**देहि नो वाञ्छितान्कामान्दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥33॥**

हे देवी ! आप हमारे लिये मनोवांछित कार्य, धन, धान्य, आयु, कीर्ति व यश और बल की दात्री होवें। हे दधिमथी जी ! आपके लिए नमस्कार है ॥33॥

**पत्नीम्पतिव्रतां देहि सूनुमाज्ञापरायणम् ।**
**वरदे बुद्धिदे श्यामे दुष्टशत्रुविदारिणि ॥34॥**

हे देवी ! आप पतिव्रता पत्नी दें। आज्ञाकारी पुत्र दें। हे मंगला देवी ! आप नित्य मंगल दें। दुष्टशत्रुविनाशिनी आप दधिमथीजी के लिए नमस्कार है ॥34॥

**दुःखेऽतिविषमे घोरे संग्रामे शत्रुसङ्कटे ।**
**सर्वत्र रक्ष नो देवि जगदम्ब नमोऽस्तु ते ॥35॥**

हे जगदम्ब ! आप अत्यन्त विषमदुःख में, भयंकर युद्ध में, शत्रुसंकट में, सर्वत्र ही हमारी रक्षा करें। आपके लिए नमस्कार है ॥35॥

**दधिमथ्यै नमस्तुभ्यं नमस्त्रैलोक्यधारिणि ।**
**विश्वेश्वरि नमस्तुभ्यं नमोऽथर्वणकन्यके ॥36॥**

हे तीनों लोकों को धारण करने वाली विश्वेश्वरी! अथर्वण महर्षि की कन्या दधिमथी देवीजी ! आपके लिए नमस्कार है ॥36॥

**विष्णुप्रिये नमस्तुभ्यं जगदानन्ददायिनि ।**
**माहेश्वरि नमस्तुभ्यं दुःखदारिद्र्यनाशिनि ॥37॥**

हे माहेश्वरी ! विष्णुप्रिया ! जगदानन्ददायिनी ! दुःखदारिद्‌यनाशिनी ! आपके लिए नमस्कार है ॥37॥

**त्वमेव जननी मातस्त्वमेव जनकः परः ।**
**त्वमेव धनसम्पत्तिस्सर्वविद्याकरी नृणाम् ॥38॥**

आप ही जन्मदायिनी माता, आप ही परमपिता व आप ही धन–सम्पत्तिरूपा व समस्त मनुष्यों की विद्यारूपा हो ॥38॥

**स्मृतिर्मेधा दया नित्या भद्रा तुष्टिस्तथैव च ।**
**विष्णुमाया महाशक्तिः शान्तिः श्रद्धाथ चेतना ॥39॥**

हे देवी ! आप ही स्मरणशक्ति, बुद्धि, दया, नित्या, कल्याणी, संतुष्टि, महाशक्ति, विष्णु, माया, शान्ति, श्रद्धा और चैतन्यरूपा हो ॥39॥

**महालक्ष्मि नमस्तुभ्यं दिव्यशक्तिस्वरूपिणि ।**
**भूयो भूयो नमस्तुभ्यं दधिमथ्यै नमोऽतु ते ॥40॥**

आप ही दिव्यशक्तिरूपिणी महालक्ष्मी हो। हे दधिमथीजी आपके लिए पुनः पुनः नमस्कार है ॥40॥

**श्रेयस्करि महाकालि ! बिन्दुनादस्वरूपिणि ।**
**कलारूपे दधिमथि ! महामाये नमोऽस्तु ते ॥41॥**

हे कल्याणकारिणी ! हे महाकाली ! हे बिन्दुनादरूपा, कालरूपा, महामाया दधिमथीजी ! आपके लिए नमस्कार है ॥41॥

**त्वमागमश्च निगमः सुधा हंसी सुमोहिनी ।**
**गतिर्मतिर्महालक्ष्मीर्दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥42॥**

आप ही आगम, निगम, अमृत,हंसी, मोहिनी, गति, बुद्धि व महालक्ष्मी दधिमथी हैं। आपके लिए नमस्कार है ॥42॥

**साम्नां चाथर्वणां वेद्या याजुषी वेदसंस्तुता ।**
**प्रणवः प्रकृतिः प्रज्ञा दधिमथ्यै नमोऽस्तु ते ॥43॥**

आप ही सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद से ज्ञेय हैं। वेद द्वारा आपकी स्तुति की जाती है। आप प्रणव, मूल प्रकृति, विशिष्टबुद्धि श्री दधिमथी हैं। आपके लिए नमस्कार है ॥43॥

**क्षमस्व देवदेवेशि क्षम्यतां भुवनेश्वरि ।**
**तव पदाम्बुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु नः ॥44॥**

हे भुवनेश्वरी माँ, हे सर्वदेवस्वामिनी, क्षमा करो ! क्षमा करो ! आपके श्री चरणकमलों में हमारी नित्य निश्चल भक्ति बनी रहे ॥44॥

**वशिष्ठ उवाच ॥45॥**

वशिष्ठ बोले ॥45॥

**अथ देवस्तुतिं श्रुत्वा देवी सन्तुष्टमानसा ।**
**उवाच वचनं सत्यं मधुरं जयसूचकम् ॥46॥**

अब देवी ने वेदों द्वारा की गयी स्तुति से संतुष्ट होकर सत्य, मधुर और जयसूचक वचन कहे ॥46॥

**श्रीदधिमथ्युवाच ॥47॥**

श्री दधिमथी ने कहा ॥47॥

**पूर्वमेव हि जानामि युष्मद्दुःखस्य कारणम् ।**
**मा भैषीष्टाऽधुना देवाः शृणुत श्रेयसीं गिरम् ॥48॥**

आप सभी के दुःख का कारण मुझे पहले से ही ज्ञात है। हे देवो ! अब डरो नहीं और मेरी कल्याणकारिणी वाणी सुनो ॥48॥

धर्मशत्रून्हनिष्यामि प्रवृत्तान्पापकर्मसु ।
दुष्टदैत्यान्वधिष्यामि गोविप्रसुरकण्टकान् ॥49॥

मैं पापकर्म में लगे हुये धर्म के शत्रुओं और गाय, देव, ब्राह्मण के लिए कष्टकारक दुष्ट दैत्यों का विनाश करूँगी ॥49॥

स्वराज्यं वः प्रदास्यामि तथैश्वर्याणि नित्यशः ।
शत्रून्वश्चूर्णयिष्यामि तथैनं विकटासुरम् ॥50॥

आपको मैं स्वर्ग का राज्य व नित्य ऐश्वर्य प्रदान कर, सभी शत्रुओं को नष्ट कर इस विकटासुर का भी वध करूँगी ॥50॥

यात दध्यब्धिमधुनाऽहमप्यायामि सत्वरम् ।
आहूयतां स विकटो यो युद्धमदगर्वितः ॥51॥

अब आप दधिसागर को पहुँचें और मैं स्वयं भी वहाँ शीघ्रता से आ रही हूँ। आप घमण्डी विकटासुर को ललकारें ॥51॥

इत्थं सुराननुगतान्देवी दधिमथी रणे ।
सिंहोपरि समारूढा ह्यस्त्रशस्त्राण्यधारयत् ॥52॥

इस प्रकार से युद्धभूमि में अनुगामी देवों को आश्वासन देकर देवी ने सिंह पर आरुढ़ होकर अस्त्र-शस्त्र धारण कर लिए ॥52॥

रणे स्थितां तदा देवीं प्रणेमुस्ते सुरर्षयः ।
सन्तुष्टा च तदा तेभ्यस्सा निजं कवचं ददौ ॥53॥

युद्धभूमि में उपस्थित देवी के दर्शन कर देवों व ऋषियों ने उन्हें प्रणाम किया। तब देवी ने प्रसन्न होकर उन्हें सुरक्षार्थ स्वयं के कवच प्रदान किये ॥53॥

अभेद्यं तदिदं वर्म धारयन्तो जयप्रदम् ।
उच्चैर्जयं ब्रुवाणास्ते युद्धार्थं सर्व उद्यताः ॥54॥

देवों ने तब जयप्रद अभेद्य कवच धारण करके, उच्च स्वर से जयघोष करते हुए, युद्ध करने की पूरी तैयारी की ॥54॥

॥ इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये इन्द्रादिकृतस्तुति-
वर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

# नवमोऽध्यायः

**वशिष्ठ उवाच ॥1॥**

वशिष्ठ बोले ॥1॥

**तदैवासौ जगद्धात्री त्वरितं सागरं गता ।**
**चकार तुमुलं युद्धं तद्दैत्यपतिना सह ॥2॥**

तत्काल ही वह जगन्माता अत्यन्त स्फूर्ति से सागर पहुँची व उस दैत्यराज के साथ में उन्होंने भयंकर युद्ध आरम्भ कर दिया ॥2॥

**तत्र देव्यां महाक्रुद्धो बलाच्छस्त्राण्यवाकिरत् ।**
**तदा तस्योग्रतां दृष्ट्वा भयमापुः सुरा भृशम् ॥3॥**

तब उस दैत्य ने महाक्रोधित होकर बड़े-बड़े शस्त्रों की वर्षा शुरु कर दी तब उसकी प्रचण्डता देखकर सभी देवगण बहुत भयभीत हो गये ॥3॥

**जयाम्ब जहि दैत्येशमिति देवाः समब्रुवन् ।**
**तदा क्रोधसमायुक्ता देवी शूलं करेऽधरत् ॥4॥**

अम्बिकाजी के लिए जयघोष कर देवता बोले कि आप इस दैत्यराज का वध कीजिए। तभी देवी ने अत्यन्त क्रोधित होकर हाथ में त्रिशूल धारण कर लिया॥4॥

**ततो दधिमथी सद्यो दैत्येशं हन्तुमिच्छया ।**
**शूलं च संमुखे कृत्वा दुद्राव सहसा तदा ॥5॥**

तब दधिमथी देवी ने दैत्यराज का वध करने के लिए त्रिशूल को दैत्य के सामने किया और अचानक उस पर झपट पड़ी ॥5॥

**सवृक्षा गिरयो भग्नाश्चकम्पे च वसुन्धरा ।**
**तदा दधिमथी तस्य हृदि शूलं समाक्षिपत् ॥6॥**

वृक्षों सहित ही पर्वत टूट गये व भूचाल से धरती काँप गयी। तभी दधिमथी जी ने उसके हृदय में त्रिशूल का प्रहार कर दिया ॥6॥

**त्रिशूलघातेन हि दानवप्रभुः,परिभ्रमद्गात्र–विशीर्णलोचनः।**
**विदीर्णबाह्वङ्घ्रिशिराः समापतत्,यथेन्द्रवज्राभिहतः शिलोच्चयः ॥7॥**

तब उस दानवराज का शरीर कांप गया। आँखें फूटकर बाहर आ गयीं। प्रहार से भुजायें, पांव व मस्तक छिन्न–भिन्न होने से वह गिर पड़ा, जिस प्रकार वज्र के प्रहार से कोई विशाल पर्वत गिर पड़ता है ॥7॥

**त्रिशूलेन तदा देवी ह्यसुरस्य शरीरतः ।**
**वस्तुसारैश्च युक्तानि तदन्त्राणि समग्रहीत् ॥8॥**

तब देवी ने त्रिशूल से विकटासुर के शरीर से पञ्चभूतों के गुणों से युक्त आंतों को खींच लिया ॥8॥

**ततः सा विजयं लब्ध्वा सागरादुत्थिता बभौ।**
**उद्यन्निव समुद्रान्तर्यथा निशि निशाकरः ॥9॥**

देवी विजयी होकर सागर से बाहर प्रकट होती हुई, इस प्रकार सुशोभित हुई, जिस प्रकार रात्रि में सागर से उदय होता हुआ चन्द्रमा दिखाई देता है ॥9॥

**साऽम्बा परा हेमसमानकान्तिरुदञ्चिताष्टादशशक्तिभिश्च ।**
**रत्नस्रजोल्लासितकण्ठदेशा, सुक्षौमरक्ताम्बरशोभिताङ्गी ॥10॥**

उस समय पर पराम्बिका सुवर्ण के समान कान्तिमय, अठारह शक्तियों सहित कण्ठ में देदीप्यमान रत्नमालाओं से सुसज्जित व सुन्दर लाल रेशमी वस्त्र धारिणी होकर श्रेष्ठ अंगों से सुशोभित हुई ॥10॥

**सुगन्धिपुष्पैरभिराजमाना,सरोजनेत्रा कमलेव तस्थौ ।**
**समुद्रकल्लोलविलोलशब्दं, शङ्खं प्रदध्मौ जयसूचनाय ॥11॥**

सुगन्धित पुष्पमालाओं से शोभायमान, कमलनयनी, समुद्र की लहरों के समान गंभीर, विजयसूचक शंखध्वनि करती हुई वह महालक्ष्मी के समान सागर के बाहर निकलकर संस्थित हुई ॥11॥

**विलोक्य देवीं सकलाश्च देवा जयं वदन्तो हृदि मोदमानाः ।**
**क्षणेन मातापि तदाब्धिकूले समुत्तरन्ती त्वरयाऽससाद ॥12॥**

देवगण देवी के दर्शन कर हृदय में अति मोद मनाते हुये जयकार करने लगे। माता सागर के किनारे विराजमान हुई ॥12॥

**तदा स्वविजयं मत्वा ध्वनयन्तो जयध्वनिम् ।**
**दधिमथ्यां देवसंघा नानापुष्पाण्यवाकिरन् ॥13॥**

अपने को विजयी मानकर देवगणों ने जयध्वनि करके दधिमथी जी पर नाना प्रकार के पुष्पों की वर्षा की ॥13॥

**स्वर्गे दुन्दुभयो नेदुर्बहुवाद्यानि सर्वतः ।**
**जगुः किन्नरगन्धर्वा ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥14॥**

चारों तरफ अनेक वाद्य बजने लगे। देवों ने स्वर्ग में दुन्दुभियां बजाईं, किन्नर व गन्धर्वगण गान करने लगे और अप्सराओं ने नाचना आरम्भ कर दिया ॥14॥

**प्रसन्नमानसा देवाः कलिताञ्जलयस्तथा ।**
**स्तुतिश्चक्रुर्महेशान्याः प्रणमन्तः कराम्बुजैः ॥15॥**

देवगण अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर अंजलियों सहित महेश्वरी देवी के अभिवादन के साथ ही स्तुतियाँ करने लगे ॥15॥

**देवा ऊचुः ॥16॥**

देवगण बोले ॥16॥

**साकारां सुगुणां श्यामां निराकाराञ्च निर्गुणाम् ।**
**नित्यानन्दकरीं भद्रां देवीं दधिममथीन्नुमः॥17॥**

सगुण साकार व निर्गुण निराकार रूपा, श्यामा, नित्य आनन्दकारिणी, भद्रा दधिमथी के लिए हम सब प्रणाम करते हैं॥17॥

**दधिपूज्या दधिप्रीता दधीचिवरदायिनी ।**
**दधीचिदेवता श्रेष्ठा दधीचेर्मोक्षदायिनी ।**
**दधीचिदैन्यहन्त्री च दधीचिदरदारिणी ॥18॥**

आप दधि से सुपूजिता, दधि से प्रसन्न होने वाली और दधीचि को वरदान देने वाली, दधीचि की इष्टदेवी, दधीचि की मुक्तिदाता व दधीचि की दीनभावविनाशिनी व भयहारिणी हो ॥18॥

**दधीचिभक्तिसुखिनी दधीचिमुनिसेविता ।**
**दधीचिज्ञानदात्री च दधीचिगुणदायिनी ॥19॥**

दधीचि को भक्तिदान से सुखी करने वाली, दधीचि से सुपूजित, दधीचि को ज्ञान देने वाली और उनको गुणों से सम्पन्न करने वाली आप ही हैं॥19॥

**दधीचिकुलसम्भूषा दधीचेर्भुक्तिमुक्तिदा ।**
**दधीचिकुलदेवी च दधीचिकुलदेवता ॥20॥**

दधाचिकुल की अलंकाररूपा, दधीचि को भोग व मुक्ति प्रदान करने वाली, दधीचि की कुलदेवी व दधीचिकुल की देवता आप ही हैं॥20॥

**दधीचिकुलगम्या च दधीचिकुलपूजिता ।**
**दधीचिसुखदात्री च दधीचेर्दैन्यहारिणी ॥21॥**

दधाचिकुल में निवास करने वाली, दधीचिकुल से सुपूजित, दधीचि को सुख देने वाली, दधीचि के दैन्यभाव को दूर करने वाली आप ही हैं ॥21॥

**दधीचिदुःखहन्त्री च दधीचिकुलसुन्दरी ।**
**दधीचिकुलसम्भूता दधीचिकुलपालिनी ॥22॥**

दधीचि के दुःखों का नाश करने वाली, दधीचिकुलोत्पन्ना अतिसुन्दरी, दधीचिकुल में प्रकट व दधीचिकुल का पालन करने वाली आप ही हैं॥22॥

**दधीचिदानगम्या च दधीचेर्दानमानिनी ।**
**दधीचिदानसन्तुष्टा दधीचेर्दानदेवता ॥23॥**

दधीचि के दान में विराजमान, दधीचि के दान से सम्मानित, दधीचि के दान से सन्तुष्ट व उनके दान की देवता आप ही हैं ॥23॥

**दधीचिजयसम्प्रीता दधीचिजयमानसा ।**
**दधीचिजपपूजाढ्या दधीचेर्जपमालिका ॥24॥**

दधीचि की जय को मानस में रखने वाली, दधीचि की विजय से प्रसन्न, दधीचि के जप व पूजा से सम्पन्न, एवं उनके जप की माला आप ही है ॥24॥

**दधीचिजपसन्तुष्टा दधीचिजपतोषिणी ।**
**दधीचितपसाराध्या दधीचिशुभदायिनी ॥25॥**

दधीचि के जप से प्रसन्न व जप से सन्तुष्ट एवं दधीचि की तपस्या से आराधिता व दधीचि के लिए शुभदात्री आप ही हैं॥25॥

**राजराजेश्वरी त्वं नो भक्तिं देहि सुरेश्वरि ।**
**दधिमथ्यै नमस्तुभ्यं बुद्धिं नो निर्मलां कुरु ॥26॥**

हे देवेश्वरी ! हे राजराजेश्वरी ! आप हमें आपकी भक्ति प्रदान कीजिए। हे भगवती ! आप हमारी बुद्धि को निर्मल करें। आप दधिमथी के लिए हमारा नमस्कार है ॥26॥

**स्तुतिं श्रुत्वा ततो देवी सद्यः संतुष्टमानसा ।**
**वराणां दायिनी देवी प्रोवाच मधुरं वचः ॥27॥**

तब देवी इस प्रकार स्तुति सुनकर शीघ्र ही प्रसन्न हो गयी। फिर वरदायिनी देवी ने इस प्रकार मधुर वचन कहे ॥27॥

**शृणुतेह सुराः सर्वे लोककल्याणहेतवे ।**
**माघशुक्ले महाष्टम्यां चतुर्थे प्रहरे तथा ॥28॥**

हे सभी देवगणो ! यहाँ लोककल्याणकारी मेरा कथन सुनिये । माघ महीने की शुक्लपक्ष की महाष्टमी तिथि के चौथे प्रहर तथा ॥28॥

**संध्यायां प्रथमे काले तथा च भृगुवासरे ।**
**जयप्रदे शुभे योगे विकटाख्यो हतो मया ॥29॥**

शुक्रवार को सांझ के आरंभ में व जयदायी शुभ योग में मेरे द्वारा विकटासुर का वध किया गया है ॥29॥

**इयं जयाष्टमी भूमौ मम नाम्ना भविष्यति ।**
**उत्सवं ये करिष्यन्ति नरा मे जयवासरे ॥30॥**
**तेषां विघ्ना गमिष्यन्ति शुभं तेषां भविष्यति ॥31॥**

भूमि पर यह जयाष्टमी मेरे नाम से सुविख्यात होगी, जो भी मनुष्य इस विजय के अवसर पर उत्सव आयोजित करेंगे उनके सभी विघ्न दूर होंगे और वे अत्यन्त ही शुभ कार्यों से सम्पन्न होंगे ॥30-31॥

**अयि देवा इदं भूयः स्वर्गराज्यं ददामि वः ।**
**काले स्मृतापि च पुनरुद्धरिष्यामि संकटात् ॥32॥**

देवी ने कहा-हे देवो ! यह स्वर्ग का राज्य फिर से तुम्हें प्रदान करती हूँ। समय-समय पर मेरा स्मरण करने पर आप का संकटों से उद्धार कर दूंगी ॥32॥

**इत्थमादिश्य देवेभ्यः सुराणां पश्यतां क्षणात् ।**
**अन्तर्दधे महालक्ष्मीर्गता साथर्वणश्रमे ॥33॥**

इस प्रकार से देवगणों को आदेश देकर देवगणों के देखते देखते ही उस अथर्वण महर्षि के आश्रम में वे महालक्ष्मी जी उसी क्षण अन्तर्धान हो गयी ॥33॥

**सुराते निर्भया भूत्वा स्वाधिकारन्यथा पुरा ।**
**यज्ञभागान्पुनर्भुक्त्वा ह्यानन्दं भूरि लेभिरे ॥34॥**

सभी देवता निर्भय होकर पहले की तरह से अपने स्वर्गीय अधिकार भोगने लगे व फिर से यज्ञ भागों का उपभोग करते हुये पुनः आनन्दपूर्वक रहने लगे ॥34॥

**विकटाख्ये हते त्रस्ताः शेषास्ते देवशत्रवः।**
**मृत्युभीताः कम्पमानाः सद्यः पातालमाययुः॥35॥**

विकटासुर के मारे जाने पर शेष अत्यन्त त्रस्त राक्षस भी मारे जाने के भय से कांपते हुये पाताल लोक में जा छुपे॥35॥

**पुण्यां दधिमथीलीलां ये नरा कीर्तयन्ति वै।**
**यशः प्राप्स्यन्ति ते पुण्यं धनमायुश्च मंगलम्॥36॥**

जो मनुष्य पुण्यदायिनी श्री दधिमथी की लीला का वर्णन करेंगे, वे सभी यश, पुण्य, धन, आयु इत्यादि को प्राप्त करेंगे॥36॥

**देव्याश्च लीलां विकटास्यघातं पठन्ति लोकास्तदिदं चरित्रम्।**
**सुखानि लब्ध्वा ननु मर्त्यलोके, पदं लभन्ते परमोत्तमन्तत्॥37॥**

देवी द्वारा विकटासुर वध की इस पवित्र लीला व चरित्र को जो भी लोग पढ़ेंगे, वे सुनिश्चित ही मनुष्य लोक में सुखों को प्रापत कर अन्त में सर्वोत्तम पद प्राप्त करेंगे॥37॥

**॥इति श्रीदधिमथीपुराणे दधिमथीदेवीमाहात्म्ये श्री दधिमथी विजयवर्णनोनाम नवमोऽध्यायः॥**

॥ श्री दधिमथीपुराण के दधिमथीमहात्म्य में श्री दधीमथीविजय वर्णन नामक नवां अध्याय पूर्ण हुआ॥